

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३०वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

Laws grind the weak, for strong men rule the laws. क़ानून तो निर्बलों को पीसते हैं, पर ज़बर्दस्त आदमी क़ानून पर हुकूमत करते हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

सुरेन्द्र शर्मा

सरदार वल्लभभाई पटेल



लेखक

सुरेन्द्र शर्मा

प्रकाशक

शारदा-सदन, प्रयाग

प्रथम बार } सं० १९९७ वि० मूल्य ॥=)



विषय-सूची



दो बातें

भारतीय स्वतंत्रता के युद्ध का प्रश्न इस देश के जीवन-मरण का प्रश्न है। देश का कोई भी व्यक्ति, छूत, अछूत, नरम, गरम आदि चाहे किसी भी दल का क्यों न हो, अपने आपको इस प्रश्न से अलग नहीं रख सकता। प्रत्येक व्यक्ति को आज नहीं, तो कल ज़रूर, इस प्रश्न पर विचार करने और यथाशक्ति उसे सुलझाने को विवश होना पड़ेगा। अमीर-ग़रीब सभी को कन्धे से कन्धा भिड़ाकर देश की इस जीवन-मरण की समस्या को हल करना ही पड़ेगा। जो लोग देश की इस कशमकश में आज जी-जान से जुट रहे हैं, जिन लोगों ने इस विकट समस्या को सुलझाने के लिए रात-दिन एक कर रखा है, उनके उच्चतम पवित्र जीवन की एक एक बात अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है न केवल गुमराह हुए लोगों को राह पर लगाने के लिए, बल्कि भारत की उस भावी सन्तति के लिए भी, जिसे आज के पराधीन भारत की राम-कहानी पढ़ने और उसे अधोगति के गर्त्त से निकालने की साध में मर मिटने वाले राष्ट्रीय योद्धाओं के जीवन की पुण्य गाथा जानने की बड़ी भारी ज़रूरत होगी।

सरदार वल्लभभाई भारत के एक राष्ट्रीय योद्धा हैं। उन्होंने अपने उन्नत जीवन का देश का साधारण से साधारण

आदमी के जीवन के साथ मिला दिया है। वे शत्रु से लोहा लेना ख़ूब जानते हैं। परन्तु उनकी लड़ाई बिलकुल दूसरी तरह की है। अपनी ओर से वे मार-काट नहीं करते। शत्रु पर ऐसा आक्रमण भी नहीं करते, जिसमें ख़ून-ख़राबी हो। यह सब इसलिए कि, सरदार महात्मा गांधी की फ़ौज के सिपाही हैं। अहिंसा का व्रत ले चुके हैं। परन्तु इसका यह अर्थ हर्गिज़ नहीं है कि, सरदार वल्लभभाई दुश्मन की चालें नहीं समझते, अथवा उसे मुँहतोड़ उत्तर देना नहीं जानते।

बारडोली में सरकार ने हर सम्भव उपाय से काम लेकर सरदार और उनके साथी राष्ट्रीय सिपाहियों को नीचा दिखाने की पूरी कोशिश की। नौकरशाही मशीन के छोटे से लेकर बड़े तक—बम्बई के गवर्नर सर लेस्ली विलसन से लेकर भारत-सचिव तक—हर पुर्ज़े से यही स्वर निकला कि हर तरह से सत्याग्रह-आन्दोलन कुचल दिया जाय। नौकरशाही मशीन के कील-कांटों का यह स्वर बारडोली के कोने कोने में गूंजा और उसके अनुसार निहत्थी जनता को कुचलने के लिए घृणित से घृणित उपाय से काम लिया गया! परन्तु सरदार वल्लभभाई ने अपनी शांत और सत्याग्रह की निर्दोष नीति पर दृढ़ रह कर भी नौकरशाही को ऐसा क़रारा जवाब दिया कि अन्त में उसे घुटने टेक देने को विवश होना पड़ा। इस दशा में भला यह कहने का साहस कौन कर सकता है कि सरदार वल्लभभाई आज-कल की राजनीति क

नहीं समझते, और एक आदर्श सत्याग्रही के रूप में, वे आधुनिक राजनीतिज्ञों से मुठभेड़ करना नहीं जानते ?

राजा और राजनीति का वर्णन करते हुए रामायण में एक स्थल पर गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है —

साम दाम अरु दण्ड विभेदा, नृप उर बसहिं नीति कह वेदा।

हिन्दुओं के वेद और शास्त्रों के अनुसार एक राजा को ऐसी नीति अख़्त्यार करनी चाहिए कि अगर ज़रूरत हो तो चट दुश्मन से मेल कर ले, उसे रुपये-पैसे का लोभ दिला कर वश में करे, या दण्ड देकर ठीक करे, अथवा भेद-नीति से अपना काम निकाल ले। कहने का मतलब यह है कि हिन्दू शास्त्रों के अनुसार एक राजा अपने विपक्षी को नीचा दिखाने के लिए हर सम्भव उपाय से काम ले। इस देश की सरकार भी यहां के सार्वजनिक आन्दोलन को कुचलने के लिए कुछ इसी तरह की नीति से काम लेती है।

एक बार नहीं, अनेक बार अधिकारियों की ओर से कहा गया है कि वे जैसे बनेगा वैसे, सारी शक्ति लगा कर सत्याग्रह-आन्दोलन को कुचल देंगे। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि अधिकारी देश के सत्याग्रह-आन्दोलन की उस असीम शक्ति का लोहा मान चुके हैं जिसकी धधकती हुई आग की लपटें देश के कोने कोने में पहुँच चुकी हैं! तभी तो उसे कुचलने के लिए उन्हें अपनी सारी ताक़त लगा देनी पड़ी है। वे सत्याग्रहियों को दबाने के लिए सब साधनों से काम

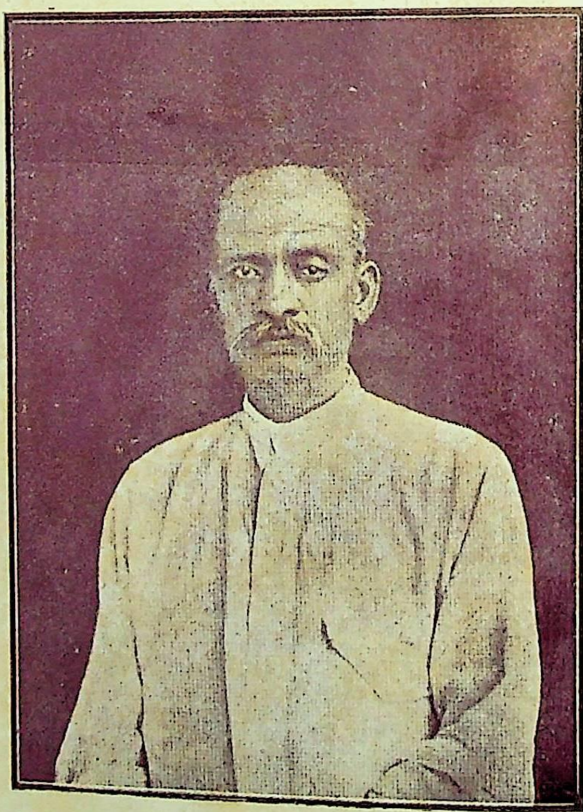
लेंगे। और फिर भी, जब वे ज़रूरत समझेंगे तभी यरवदा-जेल में महात्मा गांधी से समझौते की बातें भी कर लेंगे! इस दशा में यदि सरदार वल्लभभाई को अधिकारियों से अपने शांत और उचित ढंग से खुलकर लोहा लेने और उन्हें मुंह के बल गिरा देने की अद्‌भुत क्षमता प्राप्त है तो क्या यह कुछ कम बात है?

सरदार वल्लभभाई के जीवन की पुण्य-गाथा ठीक ठीक विस्तार के साथ केवल वही व्यक्ति लिख सकता है जिसे श्री-महादेव भाई देसाई की तरह उनके साथ रह कर, उनकी अद्‌भुत कार्य्य-शैली को पास से देखने का अवसर मिला हो। राष्ट्रीय संग्राम से अलग रह कर, एक कोने में पड़े रहने वाले आदमी, जिन्हें सरदार वल्लभभाई के जीवन का पास से अध्ययन करने का कभी अवसर नहीं मिला, उनकी जीवन-कथा को लिखने के उपयुक्त पात्र नहीं हो सकते। परन्तु फिर भी, हमने सरदार के उन दुर्लभ गुणों का गान करने का किञ्चित् प्रयास किया है जिनमें युग पलट देने की पूरी क्षमता है, और जिनका अनुकरण प्रत्येक भारतीय के कल्याण का कारण बन सकता है।

इस पुस्तक में सरदार के जीवन की महत्व-पूर्ण घटनाओं और उनके भाषणों के सङ्कलन में 'विजयी बारडोली' नाम की, सस्ता साहित्य-मण्डल, अजमेर की एक पुस्तक, 'यङ्ग-इण्डिया', 'हिन्दी-नव जीवन' तथा जिन अन्य पत्र-पत्रिकाओं

से सहायता ली गई है, उनके लेखक, सम्पादकों और प्रकाशकों के हम अत्यन्त कृतज्ञ हैं। आशा है कि यह पुण्य-गाथा अधिक से अधिक हिन्दी-भाषी जनता का ध्यान उस समस्या की ओर आकर्षित करेगी, जिसे सुलझाने के लिए, आज सरदार वल्लभभाई, यरवदा जेल की चहार-दीवारी में बन्द, एक आदर्श तपस्वी का जीवन बिता रहे हैं। जेल से बाहर, वे राष्ट्रपति के ऊँचे आसन पर आसीन होकर, सत्याग्रह के युद्ध का सञ्चालन कर रहे थे। आज वे जेल में एक तपस्वी के रूप में भारत के आत्मोद्धार की मङ्गल कामना में निरत हैं। एक राष्ट्रीय योद्धा और तपस्वी के जीवन में कितना सामञ्जस्य हो सकता है, यह कोई देश के प्यारे सरदार वल्लभभाई के जीवन में देख ले।

—सुरेन्द्र शर्मा



सरदार वल्लभभाई पटेल

शिशु प्रेस, प्रयाग।

सरदार वल्लभभाई पटेल

"Kshatriya is one who gives up his life for the country." क्षत्रिय वह है जो देश के लिए अपना जीवन दे डालता है।

स्वामी रामतीर्थ

राष्ट्र-निर्माण के समय, किसी भी देश की आधार-शिला उसके योद्धाओं की अस्थियों पर रखी जाती है। इसीलिए योद्धा देश के प्राण होते हैं। हमारे देश में योद्धा का काम प्रायः क्षत्रिय करते आये हैं। ऊपर के वाक्य में स्वामी रामतीर्थ ने क्षत्रिय का भाव व्यक्त किया है। भारतीय इतिहास में, इस प्रकार के क्षत्रिय, ऐसे अमर योद्धा, अनेक होगये हैं, जिन्होंने हँसते हँसते रणभूमि में देश के लिए अपने प्राण दे डाले।

प्रताप, शिवाजी, छत्रसाल और उन अगणित वीर राजपूतों और मराठों के बलिदान के अमर गीत, आज भी, मेवाड़, महाराष्ट्र, बुंदेलखण्ड और राजपूताने के घर घर में गाये जाते हैं, जिनके अनुपम आत्म-त्याग और अद्भुत

शौर्य्य से इस देश का इतिहास धन्य हुआ है। वे सचमुच योद्धा थे। उन्होंने जीते-जी शत्रुओं के सामने अपना सिर न झुकाया। वे योद्धा अपने देश के गौरव और जातीय मान-मर्यादा के लिए जिये और उसी के लिए मर मिटे। आज़ादी या मृत्यु, उनके जीवन का मूल मंत्र था। मौत के मुँह में हँसते हँसते घुस जाना और फिर बचकर साफ़ निकल आना, या सदा के लिए अपने जीवन का अन्त कर देना उनके बाएँ हाथ का खेल था। 'जल में रहकर मगर से बैर' करने, अथवा जलती हुई आग से खेल खेलने का अपूर्व साहस उनमें था। इसीलिए वे मृत्यु से डरने वाले जीव नहीं थे। देश की मान-मर्यादा के लिए मर-मिटने ही में उन्होंने जीवन का वास्तविक आनन्द अनुभव किया।

यह बात पुरानी है। आज तो बिलकुल नये सिरे से आधुनिक भारत का निर्माण हो रहा है। भारतीय राष्ट्र-निर्माण के उद्योग में सन् १८५७ से अब तक अगणित योद्धा अपने प्राण दे चुके हैं। आधुनिक भारत की नींव में जिन योद्धाओं की अस्थियाँ गारे के रूप में गल चुकी हैं, वे इस देश के इतिहास के चमकते हुए नक्षत्र के समान हैं। देश की भावी सन्तति सदा उनकी पूजा करेगी।

परिचय

आधुनिक भारत के योद्धा आज़ादी की लड़ाई में व्यस्त हैं। नेता और कार्य्य-कर्त्ता सभी अपने अपने काम में लग रहे हैं। देश के प्रायः सभी नेता जेलों में बन्द हैं। जो लोग आज जेलों में बन्द हैं, उनमें से एक लोक-सेवी ने सन् १९२१ में जनता के सामने अपना परिचय देते हुए कहा था—

"मैं छैल-छबीला रसिया था। राजनीति में भाग लेने से ताश खेलना हज़ार गुना अच्छा समझता था। मुझे इस मक्कारी और मसखरापन के व्यापार से घृणा थी। सहसा इस क्षेत्र में गांधीजी प्रकट हुए। उन्होंने चमत्कार ही तो किया। मेरी काया पलट गई।"

आज ९ बरस के बाद देश उस लोक-सेवी को 'सरदार' के नाम से पुकारता है। वही आदमी देश में आज सरदार वल्लभभाई पटेल के नाम से प्रसिद्ध है। देश की स्वतन्त्रता के युद्ध में यह महात्मा गांधी के दाएँ हाथ हैं। बारदोली के युद्ध को विजय करके उन्होंने देश के उन इने-गिने नर-रत्नों में बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया है जो अपने अनुपम बलिदान और लोक-सेवा के कारण भारतीय इतिहास मे सदा सुनहले अक्षरों में जगमगाते रहेंगे।

गुजरात में लवा और कड़वा नाम की, कुरमी जाति की दो उपजातियाँ हैं। ये जातियाँ लव और कुश की वंशज कही

जाती हैं। सरदार वल्लभभाई इन्हींमें से लवा उपजाति के एक रत्न हैं। गुजरात के पेटलाद ताल्लुका में करमसद एक गाँव है। उसी गाँव में सरदार पटेल के माता-पिता रहते थे। उनके यहाँ खेती होती थी। उनके पास घर की कुछ ज़मीन भी थी।

सरदार पटेल के पिता श्रीझवेर भाई बड़े वीर और साहसी थे। सन् १८५७ की आज़ादी की लड़ाई में उन्होंने खूब खुल कर भाग लिया था। झाँसी की वीराङ्गना महारानी लक्ष्मीबाई का प्रान्त उनका अच्छी तरह देखा-भाला था। ग़दर के दिनों में तीन बरस तक घरवालों को उनका पता तक न चला।

श्रीझवेर भाई बड़े ईश्वर-भक्त थे। वे 'स्वामी-नारायण' की सेवा में रात-दिन लगे रहते थे। ५५ बरस की उम्र से वे उनकी सेवा करने लगे थे। घर में केवल एक बार भोजन के लिए आते थे। सारा समय उनका भजन-पूजन में ही लगता था। झवेर भाई का स्वास्थ्य बहुत अच्छा था। जीवन के अन्तिम समय तक वे प्रतिदिन मुट्ठी भर कच्चे चावल और बाजरा चबाया करते थे। ९२ बरस की उम्र में उनका देहान्त होगया। सरदार पटेल की पूजनीया माता भी उनके पिता के ही समान संयमी और धर्मशीला हैं। आजकल उनकी उम्र ८० बरस की है, तो भी वे दिन-दिन भर भजन-पूजन और चरखा कातने में लगी रहती हैं।

माता-पिता के इन गुणों का प्रभाव सरदार पटेल के चरित्र पर भी ख़ूब पड़ा है। उनके जीवन में संयम, सादगी, कष्ट-सहन, साहस आदि गुणों का बहुत व्यापक विकास हुआ है। सचाई और दृढ़ता तो उनमें कूट-कूट कर भरी है। बड़े से बड़े ख़तरे और कष्ट-सहन के समय पीछे हटना तो वे जानते ही नहीं। बारदोली के सत्याग्रह-संग्राम के अवसर पर 'सरदार' की दृढ़ता का परिचय देश भर को मिल चुका है।

बाल-जीवन और शिक्षा

वल्लभ भाई का बाल-जीवन माता-पिता के साथ गाँव में ही बीता। आरम्भ ही से पिता को उनकी शिक्षा का बड़ा ध्यान था। वे रोज़ सवेरे बालक वल्लभ को खेत पर ले जाते और रास्ते में आते-जाते उसे पहाड़े याद कराते थे। वल्लभ का बाल-जीवन बड़ा मनोहारी था। उनके विद्यार्थी-जीवन में अनेक ऐसी मनोरञ्जक घटनायें हुईं जिनसे घर और बाहर के सभी लोगों को समय समय पर बड़ा आनन्द मिला।

वल्लभ भाई को, प्रारम्भिक शिक्षा कुछ तो गांव में, और कुछ पेटलाद में मिली। माध्यमिक शिक्षा के लिए उन्हें नड़ियाद और बड़ोदा जाना पड़ा। जब वे नड़ियाद में पढ़ते थे तब उन्होंने अपने स्कूल में एक आन्दोलन खड़ा कर दिया। बात यह थी कि स्कूल के एक मास्टर स्कूली पुस्तकों का

व्यापार करते थे। वल्लभ भाई ने आन्दोलन उठाया कि कोई लड़का उनसे पुस्तकें मोल न ले। लड़कों में बड़ी उत्तेजना फैली, यहां तक कि, हड़ताल हो गई। ५-६ दिन तक स्कूल बन्द रहा। अन्त में शिक्षक को झुकना पड़ा। इस पर वल्लभ भाई ने हड़ताल का भी अन्त करा दिया।

नड़ियाद से वल्लभ भाई पढ़ने के लिए बड़ौदा पहुंचे। संस्कृत पढ़ने में उनकी रुचि नहीं थी। इसी कारण मेट्रिक में उन्होंने गुजराती ली। छोटेलाल नाम के एक शिक्षक गुजराती पढ़ाते थे। संस्कृत छोड़ कर गुजराती पढ़ने वाले विद्यार्थियों से वे बहुत चिढ़ते थे। जब वल्लभ भाई उनकी कक्षा में पहुंचे तब उन्होंने कहा—

"आइए महापुरुष, कहाँ से पधारे? आप संस्कृत छोड़ कर गुजराती लेते तो हैं, पर क्या आप यह बात जानते हैं कि बिना संस्कृत के गुजराती अच्छी तरह नहीं आती?" इसके उत्तर में विद्यार्थी वल्लभ बड़ी गम्भीरता से बोले—"महाराज, यदि हम सभी संस्कृत पढ़ने लग जायँगे, तो आप फिर किसे पढ़ायेंगे?"

इसी बात पर शिक्षक और विद्यार्थी में मन-मुटाव हो गया। कुछ ही दिनों में झगड़ा बढ़ गया और मामला हेडमास्टर के पास पहुंचा। उनके पूछ-ताछ करने पर विद्यार्थी वल्लभ ने बड़े तपाक से कहा—"यह मुझसे पहाड़े लिखवाते हैं। यह भी

कोई सज़ा है ? पढ़ने की पुस्तक से कुछ लिखायें तो मुझे कुछ लाभ भी हो। इस पहली पुस्तक के एक-दो के पहाड़े से तो किसी को लाभ नहीं हो सकता।" हेडमास्टर ने विद्यार्थी वल्लभ को योंही बिना कुछ कहे-सुने छोड़ दिया।

इस घटना के दो महीने बाद एक दूसरे शिक्षक से झगड़ा हुआ। उसीके कारण वल्लभ भाई बड़ौदा-हाईस्कूल से निकाल दिये गये ! इस पर वे नड़ियाद चले आये और वहां मेट्रिक की परीक्षा पास की।



मुख़्तारी

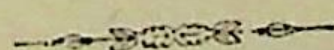
वल्लभ भाई के माता-पिता की आर्थिक दशा अच्छी न थी। वे बहुत साधारण हैसियत के आदमी थे। इसीलिए वल्लभ-भाई ने कालेज की पढ़ाई का मोह छोड़ दिया। कालेज की पढ़ाई के लिए बहुत रुपये की ज़रूरत होती है। एक मामूली आदमी इस पढ़ाई का ख़र्च नहीं उठा सकता। असल बात यह है कि वल्लभ भाई को ऊँची साहित्यिक शिक्षा प्राप्त करने का चाव था ही नहीं। ४-५ बरस का समय कालेज की ऊँची पढ़ाई में खोदेना उनके लिए बहुत कठिन था। उन्होंने मुख्तारी का इम्तिहान पास किया और गोधरा में मुख़्तारी करने लगे।

आरम्भ ही से वल्लभभाई को विलायत जाकर बैरिस्टरी पढ़ने की धुन थी। इसी धुन में उन्होंने मुख्तारी शुरू कर दी थी। गोधरा के बाद उन्होंने बोरसद में मुख्तारी का काम किया। वल्लभ भाई के पास अधिकतर फ़ौजदारी के मामले आते थे। अपनी कार्य्य-पटुता और बुद्धि-कौशल के बल पर थोड़े ही दिनों में वे ज़िले भर में प्रसिद्ध हो गये।

वल्लभ भाई के पास क़त्ल, डाका, धोखा-धड़ी से रुपया

मारलेने आदि के मामले बहुत आते थे। वे अपने मुक़दमों को बड़ी चतुरता से लड़ते थे। उनकी सूझ-बूझ विलक्षण थी। अपने मामले को सिद्ध करने के लिए वे जिस ढँग से दलीलें देते थे, उससे अदालतों के हाकिम दङ्ग रह जाते थे। फ़ौजदारी अदालतों के अधिकारियों तथा पुलिस आदि महकमों के हाकिमों पर वल्लभ भाई का बड़ा रौब था। हाकिम-हुक्काम उनके डर से काँपते रहते थे।

हस्बएड नाम का एक अँगरेज़ मजिस्ट्रेट ज़बान का बड़ा हलका था। बात बात में वह अबे-तबे पर उतर आता था। क़त्ल के एक मामले में वल्लभभाई ने उसे बड़ा तङ्ग किया। यह बात याद करके आज भी वे खूब हँसते हैं। अपनी मुख्तारी के दिनों में उन्होंने कई कलक्टरों और मजिस्ट्रेटों को ख़ूब छकाया। बात यह थी कि क़ानूनी ढँग से बाल की खाल निकालने में वे बड़े पटु थे। उन्हें कोई गम्भीर क़ानूनी ज्ञान नहीं था। पर मनुष्य-स्वभाव की जाँच, अपनी व्यवहार-कुशलता, जिरह करने और प्रमाण जुटाने की ख़ूबी के बल पर ही वे अधिकतर मामलों में सफल होते थे। प्रायः वे दीवानी मामलों की बहुत कम ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेते थे।



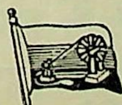
पत्नी-वियोग

एक बार गोधरा में प्लेग की बड़ी भयङ्कर बीमारी फैली। अदालत के नाज़िर का लड़का बीमार हो गया। वल्लभभाई ने उसकी भरसक दवा-दारू और सेवा-शुश्रूषा की, पर वह बच नहीं सका। उसका देहान्त हो गया। श्मशान से लौटते ही स्वयं भी बीमार पड़े। उनके गिल्टी निकल आई। इससे वल्लभभाई तनिक भी नहीं घबड़ाये। बीमारी की दशा में ही वे गाड़ी में बैठ कर पत्नी के साथ आनन्द चले आये और उनसे कहा—"तुम करमसद जाओ और मैं नड़ियाद जाता हूं, वहाँ अच्छा हो जाऊँगा।" इस दशा में किस पत्नी को पति का साथ छोड़ देने का साहस होसकता है? वल्लभ-भाई ने बड़ा ज़ोर डाल कर अपनी पत्नी को करमसद भेज दिया।

नड़ियाद पहुंच कर वे अच्छे हो गये। करमसद में उनकी पत्नी बीमार पड़ीं। वल्लभ भाई उन्हें 'आपरेशन' के लिए बम्बई पहुंचा आये। प्रति दिन उनके आपरेशन की ख़बर यहाँ उन्हें मिलती ही रहती थी। थोड़े दिन बाद पत्नी की तबीयत

ज़्यादा गिर गई। एक दिन वल्लभभाई अदालत में एक मुक़दमा लड़ रहे थे कि उन्हें तार से पत्नी के देहान्त की ख़बर मिली। तार को पढ़ कर उन्होंने मेज़ पर रख लिया। जब मुक़दमे का काम समाप्त हुआ तब अदालत से बाहर आकर उन्होंने मित्रों से उस तार की चर्चा की।

वल्लभ भाई बड़े धैर्यवान व्यक्ति हैं। कठिन से कठिन समय पर, बड़े से बड़ा सङ्कट पड़ने पर भी, वे धीरज को नहीं खोते। जीवन की एकमात्र सहचरी के देहावसान का तार मिलने पर उनके माथे पर शिकन तक नहीं पड़ी। वे अदालत में बराबर अपना काम करते रहे। असल बात यह है कि कठिन से कठिन परीक्षा के अवसर पर भी उनका हृदय विचलित नहीं होता। वीरता, साहस, धीरज आदि गुण वल्लभभाई की उँगली के इशारे पर नाचते हैं।



विदेश-यात्रा

देश के सैकड़ों युवक प्रतिवर्ष अमेरिका और यूरुपीय देशों में जाते हैं। परन्तु ऐसे कितने हैं जो वहाँ के विलासिता के वातावरण में फँस कर पथ-भ्रष्ट न हों ? विदेश से लौटने पर बहुत से युवकों का जीवन ही बिल्कुल बदल जाता है। वल्लभ भाई को विलायत जाकर बैरिस्टरी पास करने की धुन आरम्भ ही से थी। मुख्तारी करते हुए वे विदेश-यात्रा की तैयारी करने लगे। विलायत जाने के लिए जिस कम्पनी से पत्र-व्यवहार हो रहा था, उसका अन्तिम पत्र वल्लभभाई के बड़े भाई श्री विट्ठलभाई के हाथ पड़ गया। अँगरेज़ी में दोनों का नाम वी० जे० पटेल होने के कारण यह गड़बड़ होगई। श्री विट्ठल भाई ने छोटे भाई से कहा—"मैं तुमसे बड़ा हूँ, पहले मुझे इंग्लैण्ड हो आने दो। मेरे वापस आजाने पर तुम्हें जाने का अवसर मिल सकेगा, पर तुम्हारे लौट कर आजाने पर मेरा जाना नहीं हो सकेगा।"

इस बात-चीत के १५ दिन बाद श्रीविट्ठल भाई पटेल इँग-

लैंड चले गये। वे तीन वर्ष बाद देश में वापस लौटे। फिर वल्लभ भाई विलायत गये। वहाँ पहुंचते ही वे पढ़ाई में जुट गये। इस समय उनकी उम्र आधी हो चुकी थी। संसार का व्यावहारिक ज्ञान भी उन्हें हो चुका था और अपना लाभ-हानि, भला-बुरा समझने की क्षमता उनमें थी। अब उनके पथ-भ्रष्ट होने की कोई संभावना नहीं थी।

बचपन में वल्लभभाई बड़े नटखट और चञ्चल स्वभाव के थे। किन्तु इँग्लैंड पहुंच कर वे एक गम्भीर स्वभाव के सौम्य विद्यार्थी बन गये। पढ़ने में उन्होंने बड़ा परिश्रम किया। वल्लभ-भाई के रहने की जगह से मिडिल टेम्पल का पुस्तकालय ११ मील दूर था। वे सवेरे उठ कर पुस्तकालय में जा बैठते और पढ़ने में जुट जाते। वहीं वे दूध और रोटी खा लेते और दिन भर पुस्तकें पढ़ने में लगे रहते। शाम होने पर जब सब लोग चले जाते और कर्मचारी उन्हें पुस्तकालय के बन्द होने की सूचना देते, तब वे उठकर घर आते। कहते हैं कि इन दिनों उन्होंने सत्रह-सत्रह घण्टे तक लगातार अध्ययन किया। इसका फल भी उन्हें वैसा ही मिला।

वे बैरिस्टरी की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम उत्तीर्ण हुए। इससे ५० पौंड की एक छात्रवृत्ति मिली और चार टर्म की फीस मुआफ़ होगई। इम्तिहान में प्रश्न-पत्रों के जो उत्तर वल्लभ भाई ने लिखे उन्हें पढ़कर परीक्षकों को

बड़ा ताज्जुब हुआ। उनमें से एक ने हिन्दुस्तान में रहनेवाले चीफ़ जस्टिस स्काट के नाम वल्लभ भाई को एक पत्र भी लिख दिया था। पत्र में लिखा था कि वल्लभ-भाई जैसे आदमी को न्याय-विभाग की ऊँची से ऊँची जगह दी जानी चाहिए।

इस प्रकार वल्लभ भाई बैरिस्टरी की परीक्षा पास कर लेने के दूसरे ही दिन हिन्दुस्तान के लिए जहाज़ पर रवाना होगये। विलायत की सैर करने के लिए दो-चार दिन को भी वे वहाँ नहीं ठहरे। विलायत में उन्होंने इस प्रकार निरपेक्ष रहकर पढ़ाई की, मानों वहाँ के विलासिता के वातावरण और गोरी सभ्यता का उन पर कोई असर ही नहीं पड़ा। इङ्गलैंड में केवल पुस्तकें ही उनकी सहचरी थीं। वहाँ की नवागत विदेशी यात्रियों की आँखें चका-चौंध करने वाली नाच, गान, खेल, तमाशे, सिनेमा, थियेटर आदि बातों से वल्लभ भाई बिल्कुल वञ्चित रहे। विलायत की इन आधुनिक निआमतों की ओर सीधे-सादे देहाती वल्लभभाई तनिक भी आकर्षित नहीं हुए। पढ़ाई का काम समाप्त कर वे जहाज़ पर सवार हो सीधे भारत वापस लौट आये।

—०—

बैरिस्टरी

हमारे देश में वकालत और बैरिस्टरी का पेशा प्रायः अच्छा नहीं समझा जाता। इस पेशे से आमदनी तो ख़ूब होती है, पर मनुष्य का नैतिक पतन हो जाता है। अदालत के सामने झूठे मामले को सच, और सच्चे मामले को झूठ सिद्ध कर देना वकील और बैरिस्टरों के बाएँ हाथ का खेल होता है। अदालत के सामने मुक़दमा लड़ते समय एक वकील या बैरिस्टर की नज़र में सच या झूठ की कोई क़ीमत नहीं होती। सच हो या झूठ, उसे अपने मामले को जीतने के लिए ज़रूरत के अनुसार, किसी तरह भी स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह साबित करने से मतलब रहता है। वह इसी बात की रोटी खाता है। इसीलिए वकील बैरिस्टरों को "नैतिक दिवालिया" के नाम से पुकारा जाता है।

लेकिन दुर्भाग्य या सौभाग्य से हमारे देश के बड़े बड़े नेता इन्हीं वकील या बैरिस्टरों में से निकले हैं। उनमें से अधिकांश इस समय अपनी वकालत छोड़ चुके

हैं। महात्मा गान्धी पहले स्वयं बैरिस्टर थे। परन्तु इस पेशे में छल, कपट, बेईमानी, झूठ, मक्कारी आदि बातों की भरमार देख कर उनका कोमल हृदय व्यथित हो उठा। उन्होंने सदा के लिए इस अनैतिक धन्धे से अपना पीछा छुड़ा लिया। बैरिस्टर के रूप में अधिक समय तक वे 'नैतिक दिवालिया' कैसे बने रहते? उन्हें तो गले में झोली डाल कर, एक महापुरुष के रूप में भारत का हृदय-सम्राट होना था!

श्रीवल्लभ भाई विलायत से एक सुयोग्य बैरिस्टर बनकर लौटे। थोड़े ही दिनों में उनकी बैरिस्टरी अच्छी चमक निकली। अहमदाबाद में वल्लभभाई की बैरिस्टरी की धाक जम गई। लोग अपने मामले इन्हींके पास लाने लगे। उनकी योग्यता के सामने पुराने पुराने वकील-बैरिस्टरों का रङ्ग फीका पड़ गया। बैरिस्टरी से उन्होंने धन भी कमाया और नाम भी।

विलायत की शिक्षा और बैरिस्टरी का नशा वल्लभ भाई पर अधिक दिनों तक न ठहर सका। खेड़ा ज़िले के ग़रीब किसान अपना दुखड़ा लेकर उनके पास आने लगे। दिन पर दिन उनका ध्यान देश की दर्दनाक हालत की ओर खिँचने लगा।

समय समय पर वल्लभ भाई और उनके बड़े भाई विट्ठलभाई पटेल में देश की वर्तमान अवस्था पर बातचीत होती थी। विट्ठलभाई बम्बई में बैरिस्टरी करते थे। उनका काम भी अच्छा

चलता था। परन्तु उनका बहुत सा समय सार्वजनिक कामों में चला जाता था। एक बार दोनों भाइयों में देश के सामयिक प्रश्नों पर बातचीत हो रही थी। दोनों भाइयों ने निश्चय किया कि देश की आज़ादी के लिए ऐसे लोक-सेवी संन्यासियों की ज़रूरत है जो अपना जीवन उत्सर्ग कर सकें। श्रीविट्ठल-भाई ने देश-सेवा का काम अपने ऊपर लिया और परिवार के भरण-पोषण की ज़िम्मेदारी वल्लभभाई के कन्धों पर पड़ी।

कुछ समय तक वल्लभभाई परिवार के झंझटों में व्यस्त रहे। परन्तु बहुत दिनों तक नोंन-तेल-लकड़ी के चक्कर में फँसा रहना वल्लभभाई के भाग्य में नहीं बदा था। विधाता की प्रेरणा तो उन्हें परिवार की चिन्ता से ऊपर उठाकर देश-सेवा के क्षेत्र में जुटा देने के लिए थी। वे महात्मा गान्धी के सम्पर्क में आये। इससे उनके विचारों में बड़ा ज़बर्दस्त परिवर्त्तन हुआ। गांधीके जादू की लकड़ी उनके सिर पर ऐसी फिरी कि उनकी काया पलट गई।

—:०::०:—

गांधीजी का प्रभाव

महात्मा गांधी तपस्वी हैं। ब्रह्मचर्य, सत्य, अहिंसा, लोक-सेवा आदि गुणों का समन्वय उनके जीवन में इतना व्यापक हुआ है, जिससे उनका व्यक्तित्व बहुत ऊँचा उठ गया है। गान्धीजी के उज्ज्वल चरित्र में बड़ा आकर्षण है! बड़ा बल है। अद्भुत शक्ति है। इसीसे मानव-समुदाय पर उनका बड़ा प्रभाव पड़ता है। देश के करोड़ों आदमी महात्मा गान्धी की एक एक बात पर अपना सब कुछ दे डालने को प्रस्तुत हो जाते हैं। हिमालय से कुमारी अन्तरीप और सिंध से शिकम तक भारत में जो प्रभाव गांधीजीका है वह आज देश में किसी नेता का नहीं है।

आख़िर बात क्या है? बात और कुछ नहीं, केवल यही है कि गांधी देश के करोड़ों दीन-हीन प्राणियों को अपने हृदय में देखता है और अन्न-वस्त्र से दुखी, अन्याय और अत्याचार से पिसे हुए जीर्ण-शीर्ण कंकालों में अपनी आत्मा का दर्शन करता है। वह करोड़ों प्राणियों के दुख-दर्द को अपना दुख-दर्द

समझता है और उसके दूर करने के लिए प्रतिक्षण बेक़रार रहता है। दरिद्रनारायण की सेवा गांधी के जीवन का सबसे आवश्यक कार्य है। उसने अपने व्यक्तित्त्व को दूसरों की सेवा में बिल्कुल भुला दिया है। उसे अपने तथा परिवार के सुख दुःख की चिन्ता नहीं। उसे चिन्ता केवल यही है कि देश के करोड़ों दीन-हीन प्राणी जो आज विदेशी सत्ता के नीचे पिसे हुए पशुओं का सा जीवन बिता रहे हैं, इस दयनीय दशा से त्राण पावें और संसार में सम्मान के साथ मनुष्य की तरह अपना जीवन बितावें।

महात्मा गांधी इसी पुण्य कार्य्य में लग रहे हैं। अपने अद्भुत प्रभाव से देश-सेवा के क्षेत्र में उन्होंने बड़े से बड़े आदमियों को घसीट लिया है। पं० मोतीलाल और जवाहरलाल ऐसे आदमियों का राजसी ठाट छुड़ाकर उन्हें खद्दरधारी बना दिया है। इसीसे कहते हैं कि महात्मा गांधी में अद्भुत शक्ति है। देश के करोड़ों आदमियों पर उनका जादू का सा प्रभाव पड़ता है। इस दशा में भला वल्लभभाई महात्माजी के प्रभाव से कैसे अछूते बचे रहते ?

पहले पहल जब महात्मा गांधी अहमदाबाद आये तब वल्लभभाई की बैरिस्टरी ख़ूब चल रही थी। महात्मा गांधी ने आकर बहुतों की शान्ति भङ्ग की। परन्तु वल्लभभाई का ध्यान उनकी ओर आकर्षित न हो सका। 'गुजरात क्लब' में बैठ-

कर अपने मित्रों से उन्होंने एक बार कहा था—"गांधी क्यों इन लोगों के सामने ब्रह्मचर्य्य की बातें करते हैं? यह तो भैंस के सामने भागवत सुनाने की सी बात है!"

थोड़े दिन बाद महात्मा गांधी गुजरात के राजनैतिक कामों में भाग लेने लगे। इससे वल्लभभाई का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ। उन्हें अब कुछ सार्वजनिक काम होने की आशा दिखाई दी। उन्होंने सोचा कि अब शायद प्रान्त में कुछ ठोस काम हो सकेगा।

गोधरा में प्रान्तीय राजनैतिक कान्फ्रेंस का अधिवेशन हुआ। उसके सभापति थे महात्मा गांधी। उसमें रचनात्मक कार्य्यक्रम का एक ढाँचा बनाया गया। कार्य्यक्रम को पूरा करने के लिए एक कमेटी बनी। वल्लभभाई उसके मंत्री नियुक्त किये गये।

वल्लभभाई ने अपने साथियों के साथ बड़े उत्साह से काम आरम्भ कर दिया। उन्होंने कमिश्नर प्रेट से बेगार के सम्बन्ध में लिखा-पढ़ी की। कमिश्नर का उत्तर न मिलने पर उन्होंने फिर एक ७ दिन का नोटिस भेजा और लिख दिया कि इसका उत्तर न मिला तो हाईकोर्ट के फैसले के आधार पर बेगार को ग़ैर-क़ानूनी ठहराने और प्रान्त भर में लोगों क बेगार बन्द कर देने की सूचना दे दी जायगी। नोटिस की मियाद पूरी होने के एक दिन पहले ही कमिश्नर ने वल्लभभाई

को बुलाकर बात-चीत कर ली। गांधीजी इससे बड़े ख़ुश हुए। अब से वल्लभभाई अधिकाधिक उनके सम्पर्क में आने लगे। आगे चलकर तो वे गांधीजी के साथ सार्वजनिक क्षेत्र में इतने घुले-मिले कि एक दूसरे के जीवन-मरण के साथी बन गये।

—०—

सत्याग्रह और असहयोग

सत्याग्रह और असहयोग में महात्मा गांधी के जीवन का वह अमर तत्त्व निहित है जो आज भारत के कोने कोने में गूँज रहा है। खेड़ा, बोरसद, नागपुर, आदि देश के अनेक स्थानों में सत्याग्रह के परम तत्त्व ने पशु-बल और मद-माती सत्ता पर विजय प्राप्त की है। इसी तत्त्व के सहारे न्याय को अन्याय पर, अत्म-बल को पशु-बल पर, और सत्य को झूठ और मक्कारी पर विजय मिली है। इसी तत्त्व के बल पर देश के सैकड़ों निर्बल प्राणियों के सामने बड़े बड़े शक्तिशाली अधिकारियों तक को झुकना पड़ा है। जिनके आँखें हों वे चम्पारन, खेड़ा, नागपुर, और बारदोली के सत्याग्रह-संग्राम का इतिहास उठा कर देख लें।

खेड़ा का सत्याग्रह

खेड़ा के सत्याग्रह का समय था। वहाँ के सैकड़ों अत्याचार-पीड़ित किसानों में आशा और उत्साह की लहर फैल रही थी इस बात के बल पर कि, गांधीजी सत्याग्रह द्वारा उन्हें कष्टों से मुक्त करेंगे। एक दिन महात्माजी ने पूछा—"मेरे साथ

खेड़ा चलने के लिए कौन तैयार है ?" उत्तर में पहला नाम वल्लभभाई का आया।

बस उसी दिन से वल्लभभाई सच्चे साथी की तरह महात्मा-जी के बताये हुए मार्ग पर चलने लगे। उनके जीवन में घोर परिवर्त्तन होगया। खेड़ा के सत्याग्रह में उन्होंने बड़ा काम किया। उन्होंने महात्माजी के साथ गांव-गांव की ख़ाक छानी और अपढ़-कुपढ़ किसानों के झोंपड़ों में सत्याग्रह का पवित्र सन्देश पहुँचाया। उन्होंने किसानों को खुल कर अधिकारियों से लड़ने के लिए तैयार किया। सैकड़ों किसान अपने स्वत्त्वों की रक्षा के लिए मैदान में अड़ गये और अन्त में उन्हें विजय मिली। उस लड़ाई में वल्लभभाई ने जिस तत्परता से काम किया, किसानों का सङ्गठन करने में जिस बुद्धि-कौशल का परिचय दिया, उससे उन्होंने महात्माजी के हृदय पर सदा के लिए अधिकार कर लिया।

रौलट-एक्ट-सत्याग्रह

खेड़ा का सत्याग्रह बन्द होने पर कुछ दिन तक वल्लभ-भाई बैरिस्टरी करते रहे। इसी बीच में रौलट एक्ट के विरोध में महात्माजी ने सत्याग्रह-संग्राम का श्रीगणेश कर दिया। देश भर में आन्दोलन की आग लग गई। कलकत्ता, बम्बई, अहमदाबाद आदि देश के बड़े बड़े शहरों में हड़तालों का ताँता

बँध गया। अहमदाबाद में कुछ उपद्रव होगया। वल्लभभाई के दर्वाज़े पर कड़ा पहरा बैठा दिया गया। उस समय उन्हें अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा। पर वे अपने पथ से विचलित नहीं हुए। भयङ्कर आपत्ति के समय भी वल्लभभाई शान्ति से अपना काम करते और लोगों के मुक़दमे लड़ते रहे। उनके इस अपूर्व साहस और धैर्य्य का तत्कालीन पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० हेली पर बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने इनके साहस की बड़ी सराहना की।

असहयोग-आन्दोलन

इसके बाद असहयोग का युग आया। देश की जनता में पञ्जाब-हत्याकाण्ड से बड़ा असन्तोष फैल रहा था। महात्मा गांधी ने इस देश के लोगों से अपील की कि विदेशी शासन के ज़ुल्मों से त्राण पाने का अमोघ अस्त्र असहयोग है। महात्माजी की अपील पर देश के हज़ारों आदमी सरकार से असहयोग करने पर तुल पड़े।

कलकत्ता में पञ्जाब-केसरी लाला लाजपतराय के सभापतित्त्व में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ। उसमें बहुत बड़े बहुमत से महात्माजी का असहयोग का प्रस्ताव पास हुआ—"पञ्जाब-हत्याकाण्ड से देश को बड़ी व्यथा पहुँची है। जब तक सरकार ख़िलाफ़त और पञ्जाब के मामले में न्याय न करे

और इस बात की गारएटी न दे कि भविष्य में इस प्रकार के निरपराध जनता पर अमानुषिक अत्याचार न होंगे तब तक सरकार के साथ हमारी यह लड़ाई बराबर जारी रहेगी। लोग सरकारी नौकरी और उपाधियाँ छोड़ दें और सरकारी अदालतों में न जायँ। लड़के कालिजों में पढ़ना और वकील वकालत करना छोड़ दें। गाँव गाँव में राष्ट्रीय पञ्चायतें बनाई जायँ। विदेशी कपड़े का बायकाट औरस्वदेशी का प्रचार किया जाय। कौंसिलों का बहिष्कार किया जाय।" संक्षेप में महात्माजी के प्रस्ताव का यही सार था। कांग्रेस का वह अधिवेशन बड़ी सफलता के साथ समाप्त हुआ। उसके बाद तो देश भर में असहयोग की आग लग गई।

वल्लभभाई ने असहयोग में बैरिस्टरी छोड़ दी। पहले वे अपने लड़के, लड़की को ऊँची शिक्षा के लिए विलायत भेजना चाहते थे। परन्तु अब उन्होंने असहयोग की दीक्षा लेकर उन्हें सरकारी स्कूल से भी उठा लिया। यह सब कर के वल्लभभाई गुजरात में असहयोग का प्रचार करने लगे। उन्होंने प्रान्त भर में दौरा किया और घर घर में नवयुग का पुनीत सन्देश पहुँचा दिया।

देश भर में असहयोग की आग जल रही थी। लोगों में बड़ी भारी उत्तेजना थी। हज़ारों आदमी देश के लिए सहर्ष जेल जाने लगे। असहयोग की सी आँधी देश में आज तक पहले

कभी न चली थी। शक्तिशाली सत्ताधारियों के आसन हिल उठे। उन्होंने आन्दोलन की आग को दबाने के लिए सारी शक्ति लगादी। परन्तु सरकार के सारे उद्योगों पर पानी फिर गया। सरकारी दमन ने आन्दोलन की आग को अधिकाधिक प्रज्वलित करने के लिए घी का काम किया। जैसे जैसे सरकार ने दमन किया वैसे ही वैसे लोगों में उभाड़ आया और आन्दोलन की आग ने उग्ररूप धारण किया।

अन्त में वह दिन भी आया जब असहयोग के प्रवर्त्तक महात्मा गांधी गिरफ़ार करके जेल में बन्द कर दिये गये। वल्लभभाई उन्हें जेल के फाटक तक पहुँचा आये। वहाँ से वापस आकर वे बड़ी सरगर्मी से कांग्रेस का काम करने लगे। महात्माजी की अनुपस्थिति में तो गुजरात के काम का सारा भार वल्लभभाई के कन्धों पर आ पड़ा। उन्होंने उस भार को जिस योग्यता से वहन किया वह सचमुच उन्हींके अनुरूप था।

वल्लभभाई गांधीजी की पल्टन के बड़े ज़बर्दस्त योद्धा हैं। वे तर्रार नहीं, ठोस काम करना .खूब जानते हैं। गांधीजी की गिरफ़ारी के बाद देश भर में एक सन्नाटा छागया। थोड़े दिन बाद ही आन्दोलन के काम में शिथिलता के आसार दिखाई देने लगे। परन्तु वल्लभभाई मैदान में डटे हुए बराबर रचनात्मक कार्य्य में जुटे रहे। कांग्रेस के उसी काम में उन्हें सफलता

दिखाई देती थी। चरखा, खादी का पुनरुत्थान, किसानों का सुदृढ़ सङ्गठन, अछूतोद्धार, राष्ट्रीय शिक्षा के लिए कुछ व्यावहारिक ठोस काम, आदि बातों में वल्लभभाई को किसी हद तक देश की वर्तमान समस्या के सुलझने की आशा दिखाई पड़ती थी। वे गुजरात प्रान्त में इसी उद्योग में जुटे रहे। उस दशा में, जब कि, प्रायः देश भर में असहयोग-आन्दोलन की प्रतिक्रिया की लहर उमड़ रही थी और हिन्दू-मुसलमान आपस ही में एक दूसरे के सर फोड़ने में लग रहे थे, वल्लभभाई अपने पथ से तनिक भी विचलित न हुए और निरन्तर अपने उद्योग में लगे रहे।

उस समय वल्लभभाई ही राष्ट्रीय गुजरात के एकमात्र कर्णधार थे। इन्हीं दिनों उन्होंने ब्रह्मा की यात्रा की और गुजरात-विद्यापीठ के लिए १० लाख रुपये इकट्ठे करके लाये। असहयोग-आन्दोलन में वल्लभभाई ने देश के लिए जो त्याग और सेवायें कीं उन्हें देश कभी भुला नहीं सकता। स्वतंत्र भारत के इतिहास में उनके ऐसे कार्य्य-दक्ष योद्धाओं की अमर कृतियाँ बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेंगी।

नागपुर का सत्याग्रह

सत्याग्रह की यही ख़ूबी है कि वह ख़ुद हमारे पास चला आता है। उसे हमें खोजने नहीं जाना पड़ता। यह गुण उसके सिद्धान्त में ही समाया हुआ है।

—महात्मा गांधी

वल्लभभाई सत्य और अहिंसा के पुजारी हैं। उनका विश्वास है कि इन गुणों के बल पर सार्वजनिक क्षेत्र में बहुत काम किया जा सकता है। देश में कोई भी सार्वजनिक संग्राम अहिंसा और सत्य के बल पर बड़ी सफलता के साथ विजय किया जा सकता है। सत्य और अहिंसा के परम तत्त्व को व्यवहार में लाकर देश के प्रायः सभी सार्वजनिक आन्दोलनों में वल्लभभाई ने खुलकर भाग लिया और अधिकारियों का मान-मर्दन किया।

नागपुर में राष्ट्रीय झण्डे की मान-रक्षा के लिए देशभक्तों ने सत्याग्रह-संग्राम का श्रीगणेश किया। नौकरशाही ने राष्ट्रीय झण्डे की शान को धूल में मिलाने की लाख चेष्टा की, पर उसे

सफलता न मिली। सैकड़ों सत्याग्रही स्वयंसेवक जेल जाने लगे। वल्लभभाई ने गुजरात से बहुत से सैनिक भेजे और रुपया भी दिया। नागपुर में क़ौमी झण्डे को इज्ज़त का सवाल था, ऐसे कठिन अवसर पर वल्लभभाई ऐसे लड़ाके भला चुप कैसे बैठे रहते?

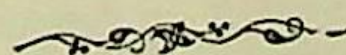
सेठ जमनालाल बजाज गिरफ़ार करके जेल में बन्द कर दिये गये। इसके बाद झण्डा-सत्याग्रह के सञ्चालन का भार राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस ने वल्लभभाई को सौंपा। गुजरात से सैनिकों के दल बराबर नागपुर पहुँच रहे थे। नागपुर के गवर्नर ने सत्याग्रह को ग़ैरक़ानूनी और अराजक आन्दोलन ठहराया। वल्लभभाई पर सरकार की बातों का कोई असर न हुआ। उन्होंने अपने उद्योगों में तनिक भी शिथिलता न आने दी। वीर सत्याग्रहियों की एक टोली के गिरफ़ार होने पर, चट दूसरी टोली राष्ट्रीय झण्डा फहराती हुई गगन-भेदी बन्दे मातरम् की जय-ध्वनि के साथ उसकी जगह पर जा पहुँचती थी। थोड़े दिन तक सत्याग्रहियों और अधिकारियों के बीच इसी तरह बड़ी क़रारी कशमकश होती रही।

सत्य और धर्म के सामने अन्याय और अत्याचार के पैर अधिक समय तक न टिक सके। अन्त में अधिकारी झुकने को विवश हुए। गवर्नर ने वल्लभभाई को अपने पास बुलाया। दोनों में वर्तमान समस्या पर बातचीत हुई। इसके फल-स्वरूप १०-१५

दिन में जनता की सारी माँगें स्वीकृत हो गईं। झण्डा-सत्याग्रह में जितने राजनैतिक क़ैदी जेल में बन्द थे वे सब बिना किसी शर्त्त के छोड़ दिये गये। निहत्थे सत्याग्रही तोप-बन्दूक वाली इतनी बड़ी ज़बर्दस्त सरकार के मुक़ाबले जीत गये! अधिकारियों ने मुँह की खाई। विजय का झण्डा फहराते हुए वल्लभभाई गुजरात लौट आये! नागपुर का राष्ट्रीय झण्डा आकाश में गौरव से ऊँचा मस्तक किये आज भी फहरा रहा है और सत्याग्रह संग्राम में राष्ट्रीय विजय के उस दिन की याद दिला रहा है जिस दिन इस देश के निहत्थे वीर योद्धाओं के सामने बड़े से बड़े शक्तिशाली अँगरेज़ सत्ताधारियों को घुटने टेक देने पड़े थे।

जिन लोगों ने नागपुर के सत्याग्रह-संग्राम में वल्लभभाई का प्रबन्ध, उनका अद्भुत साहस और शौर्य्य, दिन-रात जान लड़ाकर काम करने का ढँग, हज़ारों आदमियों को सूत के एक धागे में ज़ब्त के साथ बाँध देने का अलौकिक गुण आदि बातें देखी है वे उनमें एक सैनिक और सेनापति दोनों ही के अपूर्व गुणों का समन्वय पाते हैं। बात भी ठीक ही है। जिसने किसी सुयोग्य सेनापति के नियन्त्रण में सैनिक रह कर अथक परिश्रम से अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया और जिसने अपने सेनापति के कठोर अनुशासन में रह कर उसके एक एक शब्द पर प्राणों की बाज़ी नहीं लगादी, वह भविष्य में सेनापति के

ऊँचे और गौरव-पूर्ण आसन को सुशोभित करने के योग्य नहीं हो सकता। गांधी की छत्र-छाया में रह कर वल्लभभाई ने क्या नहीं किया? गांधी की उँगली के इशारे पर भूख-प्यास से नाता तोड़, रातोंरात जाग कर घोर परिश्रम करते हुए उन्हें किस प्रकार व्यस्त रहना पड़ा है, इसका आज अनुमान नहीं लगाया जा सकता। इसीसे तो कहते हैं कि वल्लभभाई साहस के पुतले हैं। अनुशासन की मूर्ति हैं। बाँके लड़ाके हैं, और हैं विपत्तियों के वज्र को हँसते हुए खुले सीने पर लेने वाले ऐसे वीर योद्धा जिनसे लोहा लेने में एक बार काल को भी झिझकना पड़े, नौकरशाही की तो बात ही क्या है? इस दशा में यदि वल्लभभाई और उनके साथी नागपुर के झण्डा-सत्याग्रह में विजयी हुए तो ताज्जुब ही क्या है?



बोरसद की लड़ाई

देश के दुर्भाग्य से, इस देश की सरकार के दिमाग़ में नित्य नई ऐसी बातें सूझती हैं जिनकी मिसाल दुनियाँ भर की सभ्य सरकारों के इतिहास में शायद ही कहीं ढूँढ़े मिलेगी। कभी कभी तो सरकारी मशीन में काम करने वाले अधिकारियों की अक्ल का दिवाला निकल जाता है। अभी बहुत दिन नहीं हुए, सरकार ने बोरसद की प्रजा पर यह इलज़ाम लगाया कि वह अराजक और बिगड़े दिमाग़ जरायम पेशा लोगों को आश्रय देती है, और उनके पकड़वाने में सहायता नहीं करती। जनता पर यह इलज़ाम लगा कर सरकार ने अतिरिक्त पुलिस नियुक्त कर दी और उसके खर्च के दण्डस्वरूप २ लाख ४० हज़ार रुपये उसके मत्थे मढ़ दिये।

इनमें से एक भी इलज़ाम सच न था। वल्लभभाई ने सरकार को चुनौती दी कि जनता के विरुद्ध लगाये हुए आरोपों को वह सच्चा सिद्ध करे। यदि सरकार इन आरोपों को सिद्ध कर देती तो वल्लभभाई को एक वर्ष के लिए जेल जाना

पड़ता। परन्तु अपराध सरकार का था और स्वयं उसीके मन में चोर था। वल्लभभाई ने उसकी कुटिल नीति का भण्डाफोड़ कर दिया। वे एक महीने तक लगातार गाँव गाँव में घूमे और लोगों के सामने अधिकारियों की करतूतों की पोल खोल दी।

वल्लभभाई के पकड़े जाने की अफ़वाहें उड़ रही थीं। लोगों को उनकी गिरफ़ारी की पूरी सम्भावना थी। परन्तु सवा महीने के भीतर ही सरकार ने होम-मेम्बर को भेज कर मामले की जाँच कराई। अन्त में जनता पर लदा हुआ २ लाख ४० हज़ार का दण्ड मुआफ़ कर दिया गया। सत्याग्रह समाप्त हो गया और वल्लभभाई ने अपने अन्तिम भाषण में इस विजय पर दोनों पक्षों को बधाई दी।

बोरसद ताल्लुक़े का सङ्गठन बड़ा सुदृढ़ था। वल्लभभाई की आज्ञा के बिना वहां पत्ता तक न हिलता था। क्या मजाल कि बड़े से बड़ा अधिकारी भी, डरा-धमका कर, वहां के लोगों से, अतिरिक्त पुलिस के ख़र्च के लिए एक पैसा भी वसूल कर ले! बोरसद के लोग तो वल्लभभाई ने कठोर अनुशासन के धागे में कस कर बाँध रखे थे। वे अपने प्यारे सेनापति के प्रेम-बन्धन को तोड़ ही कैसे सकते थे? सब लोगों के मुँह से एक ही बात सुनी जाती थी। वल्लभभाई के प्रताप से सब लोगों पर देश-भक्ति का गहरा रँग चढ़ चुका था। वे एक क्षण के लिए भी सरकार के अत्याचार के सामने सर न झुका सकते थे।

उनके इस प्रकार अड़ जाने से सरकार पर बड़ा प्रभाव पड़ा। आस-पास के गाँवों में भी यह चर्चा फैल गई कि बोरसद के लोगों ने अतिरिक्त पुलिस के ख़र्च के लिए सरकार को एक कानी कौड़ी भी न दी। इस लड़ाई में सरकार को बुरी तरह मुँह की खानी पड़ी।

बोरसद के पास आनन्द नाम का एक ताल्लुक़ा है। उसके कई गाँवों पर सरकार ने इसी तरह के कर का एक बोझ लादा था। परन्तु लोगों ने उसे अदा करने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। सरकार को यहाँ भी झुकना पड़ा। उसने जनता की केवल एक अर्ज़ी पर वह कर मुआफ़ कर दिया। बोरसद और आनन्द की लड़ाई में शक्तिशाली सरकार के मुक़ाबले ग़रीब भारतीय जनता को जो विजय मिली उसका सारा श्रेय श्रीवल्लभभाई पटेल को है। क्यों? इसलिए कि, दीन-हीन मृतक-प्राय निर्बल देहातियों को उन्होंने राम-नाम के सहारे अपने अधिकारों के लिए लड़ना सिखाया था। सैकड़ों किसान उनके पास आकर यह प्रश्न करते थे—इतनी बड़ी ज़बर्दस्त सरकार से लड़ने के लिए हम बिलकुल साधन-हीन और पङ्गु हैं, लड़ाई में हमारे पैर कैसे और कब तक टिक सकेंगे? उस समय वल्लभभाई बड़ी गम्भीरता से उन्हें सत्याग्रह-मंत्र की दीक्षा देते और कहते—"निर्बल के बल राम हैं।

राम का नाम लेकर मैदान में अपने अधिकारों के लिए अड़ जाओ, अन्त में विजय तुम्हारी है।" जिस वल्लभभाई ने सैकड़ों मुर्दा किसानों को राम-नाम की बूटी पिलाकर ज़िन्दा कर दिया और अपने न्यायोचित अधिकारों के लिए, सरकार से लड़ने के लिए उन्हें मैदान में खड़ा कर दिया, वह आज देश के भले के लिए जो कुछ कर गुज़रे सो थोड़ा ही है।

रचनात्मक काम

महात्मा गांधी जब तक जेल में बन्द रहे तब तक वल्लभभाई बड़ी लगन से सार्वजनिक क्षेत्र में काम करते रहे। गुजरात प्रान्त में उन्होंने इस बात का भरसक प्रयत्न किया कि वहाँ के सार्वजनिक जीवन में कहीं शिथिलता न आने पावे। महात्माजी के छूटकर आने पर वल्लभभाई का बोझ कुछ हलका हुआ। उन्हें सर उठाने की फुर्सत मिली। परन्तु वल्लभभाई ख़ाली बैठने वाले आदमी नहीं हैं। उन्होंने अहमदाबाद में कांग्रेस का रचनात्मक कार्य आरम्भ कर दिया। अहमदाबाद म्यूनिसिपैल्टी के वे चेयरमैन चुने गये। उस पद पर रहकर वल्लभभाई लगातार पाँच बरस तक बड़ी तत्परता से सुधार का काम करते रहे। इन पाँच वर्षों में उन्होंने अहमदाबाद नगर की बड़ी सेवा की। नगर की गन्दगी दूर की, शिक्षा-

प्रचार को प्रोत्साहन दिया और जनता में राष्ट्रीय भावों की जागृति पैदा की। लोग सफ़ाई, स्वास्थ्य और नागरिक अधिकारों का महत्त्व समझने लगे।

गुजरात में जब पिछली बार जल-प्रलय, अथवा बाढ़ का प्रकोप हुआ, तब वल्लभभाई ने रात-दिन अथक परिश्रम करके बाढ़-पीड़ित लोगों की जो सेवा की वह कभी भुलाई नहीं जा सकती। सरकार कान में तेल डाले बैठी थी, पर वल्लभभाई के आदमी जगह जगह बाढ़-पीड़ित लोगों की जी खोल कर अन्न-वस्त्र से सहायता करते फिरते थे। सरदार के निरीक्षण में, गुजरात की ओर से बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए बनी हुई कमेटी ने जनता की जो सेवा की उसे देखकर सरकार भी हैरान हो गई। सरकार को अपने अकाल-कोष में से बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए एक करोड़ रुपये की भारी रक़म चुपचाप वल्लभभाई के हाथों में सौंप देनी पड़ी। वल्लभभाई ने यह रुपया सरकार से माँगा था। इससे उनके अद्भुत प्रभाव और विचित्र कार्य्य-शक्ति का पता चलता है। जल-प्रलय के अवसर पर की हुई सेवाओं के कारण सरकार ने वल्लभभाई के काम की सराहना की। गुजरात की जनता के हृदय पर तो उन्होंने अपनी क्रिया-शीलता की अमिट छाप लगा दी।

—०—

बारडोली में

"धर्म-युद्ध में स्वयं परमेश्वर भाग लेते हैं। वे चढ़ाइयों के कार्यक्रम बनाते और युद्ध का सञ्चालन करते हैं। —महात्मा गांधी

बारडोली ताल्लुक़ा सूरत के ज़िले में है। वह बीस मील लम्बा और लगभग इतना ही चौड़ा है। यहाँ की ज़मीन उपजाऊ है। कई छोटी बड़ी नदियाँ यहाँ बहती हैं। पूर्व से पच्छिमी भाग की भूमि अधिक अच्छी है। सीमा पर कुछ जंगल भी हैं। बारडोली की जनता दो हिस्सों में बँटी हुई है। एक हिस्से का नाम उजली परज और दूसरे का काली परज या रानी परज है। इस ताल्लुक़ा में छोटे-बड़े कुल १३२ गाँव हैं। सब गाँवों की जन-संख्या ८७ हज़ार से ऊपर है।

सन् १९२१ में महात्मा गांधी इसी ताल्लुक़ा में सत्याग्रह की लड़ाई छेड़ना चाहते थे। इस कारण उन दिनों बारडोली का नाम देश भर में फैल गया था। परन्तु दुर्भाग्य से तब सत्याग्रह आरम्भ न हो पाया। सेनापति ने ठीक लड़ाई के समय मोरचा स्थगित कर दिया। उसी समय मानों देश पर

पाला सा पड़ गया। सैनिकों के बढ़े हुए दिल एक दम बैठ गये। बारडोली के वीर किसान योंही मन मार कर बैठ रहे।

फ्रांस की राज्य-क्रान्ति के समय वहाँ के किसानों ने बड़े बड़े ग़ज़ब ढाये थे। जो राज-सत्ता सदियों से उनका ख़ून चूस रही थी, उसके विनाश के लिए, फ्रांस की स्वर्ण-भूमि से सदा के लिए उसका अन्त कर देने के लिए लाखों किसान उन्मत्त हो उठे थे। वे पैरिस के राज-प्रासादों में खड़े सिंह-गर्जन करते हुए, अपनी अग्नि-शिखा की भाँति लपलपाती हुई तलवारों से राज-सत्ता के हाकिमों के सिर धड़ से अलग कर रहे थे! उनकी रक्त-रञ्जित तलवारें प्रति दिन अगणित राज-सत्ता-वादियों का रक्त पीकर अघाती नहीं थीं। ज़ारशाही का अन्त कर देने के लिए यही हाल रूस के किसान और मज़दूरों ने किया था। उन्होंने वर्षों के अपरिमित बलिदान के बाद ज़ार को निरङ्कुश सत्ता का अन्त करके छोड़ा! संसार के इतिहास में, रूसी किसानों और मज़दूरों के बलिदान की कहानी अपना सानी नहीं रखती। भारत के किसान और मज़दूर सङ्गठित होकर क्या नहीं कर सकते? परन्तु उन्हें तो, तपस्वी गांधी ने बार बार यही सिखाया कि तुम निहत्थे हो, हथियार उठा कर इतनी बड़ी साधन-सम्पन्न सरकार के मुक़ाबले जीत नहीं सकते, इसलिए सत्याग्रह की लड़ाई से तुम अपने अधिकार प्राप्त करो।

सन् १९२१ में बारडोली की जनता ने महात्मा गांधी के

सामने दो प्रतिज्ञायें की थीं। एक तो यह कि बाहर से कोई कपड़ा नहीं मँगावेंगे और दूसरी यह कि अछूतों को अपनावेंगे। महात्माजी ने स्वर्गीय मगनलाल गांधी को चरखा और खद्दर के काम के लिए बारडोली भेज दिया। इस ताल्लुके के आस-पास सरभोण, बाँकानेर वालोद आदि गाँवों में लोगों को कताई बुनाई सिखाने का प्रबन्ध किया गया।

सत्याग्रह-आश्रम के सैनिकों ने वल्लभभाई की देख-रेख में बारडोली की जनता में रचनात्मक काम के रूप में सत्याग्रह का बीज बोया। उन्होंने अपढ़-कुपढ़ किसानों को समझाया कि शत्रु-दल तुम्हारे ऊपर बम और गोलियों की वर्षा भले ही करें, पर तुम उस पर हाथ न उठाओ। शत्रुओं की गोलियाँ अपने सीने पर लो। इसके लिए अपने आप में अपार बल और इतनी शक्ति का संग्रह करो कि इन्द्र के वज्र की चोट भी वीरता से झेल सको। बड़े से बड़े सङ्कट के समय तुम्हारे मुँह से आह के बदले वाह निकले। वल्लभभाई की संरक्षता में इसी प्रकार की शिक्षा बारडोली के किसानों को दी गई। जगह जगह खद्दर के केन्द्र खुल गये। घर घर चरखा चलने लगे। वल्लभ-भाई के सैनिकों ने सत्याग्रह-आश्रम की विद्युत शक्ति बारडोली के घर घर में फैलादी। वे लोगों के आपस के झगड़े स्वयं ही निपटा देते थे। मद्य-मांस की आदतें छुड़वा कर उन्होंने सैकड़ों आदमियों के जीवन को पवित्र बना दिया। हिन्दू-मुसलमान

सभी किसान, जो अबतक दीन-हीन और अकर्मण्य थे, वल्लभभाई ने शांति-विद्रोह का पाठ पढ़ा कर सच्चे योद्धा बना दिये। आगे चलकर इन्हीं योद्धाओं ने बारडोली के कार्य-क्षेत्र में ऐसे क़रारे हाथ दिखाये कि देख कर दुनियाँ दङ्ग रह गई और भारत के इतिहास में सत्याग्रह की लड़ाई का बिलकुल एक नया ही अध्याय जुड़ गया।

झगड़े का कारण

सरकार ने यह नियम बना दिया है कि हर तीस साल के बाद ज़मीन के लगान की जाँच हो और ज़रूरत के अनुसार उसमें कमी-बढ़ती की जाय। जब जाँच होती है तब लगान बढ़ाने के लिए ऐसी चालें चली जाती हैं कि किसानों की आफ़त आजाती है। सन् १९२४ के मार्च, में ज्वाइन्ट पार्लामेंटरी कमेटी के निर्णय के अनुसार बम्बई प्रांतीय कौंसिल में एक प्रस्ताव इस आशय का पास हुआ कि जबतक नये नियम न बनें तब तक नये सिरे से लगान लगाने का काम स्थगित रखा जाय। सुधार करने के लिए सरकारी और ग़ैर सरकारी मेम्बरों की एक कमेटी बनाई जाय, जो जाँच करने के बाद अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करे। सरकार को यह बात बहुत खटकी, पर उस समय वह बहुमत के सामने झुकने पर विवश हुई। एक ओर कमेटी ने अपना काम शुरू किया और दूसरी ओर बन्दोबस्त का काम भी चलता रहा।

सरकार आँखें बन्द करके नई दर के अनुसार लगान वसूल करने लगी। बन्दोबस्त के हाकिम मि० जयकर ने तजवीज़ करदी कि लगान में ३० फीसदी के हिसाब से बढ़ती कर दी जाय। इस ख़बर से लोगों में बड़ा असन्तोष फैला। सैटिलमेंट कमिश्नर मि० एण्डर्सन ने मिस्टर जयकर की रिपोर्ट की जाँच-पड़ताल की और उन्हें बिल्कुल नालायक़ बताकर कहा कि लगान में ३० फ़ीसदी की बढ़ती अधिक है, यह घटा कर २६ फ़ीसदी कर दी जाय! सरकार ने उदारता का ढिँढोरा पीटते हुए ऊपर कही हुई लगान की दोनों दरों को रद कर घोषणा करदी कि मालगुज़ारी में २२ प्रति सैकड़ा के हिसाब से बढ़ती की जायगी। इस प्रकार बारडोली की मालगुज़ारी ५, १४,७६२ से बढ़ कर ६,२०,००० रुपये हो गई।

किसानों ने बहुत चीं-पुकार मचाई कि हम लगान का पुराना ही बोझ सहने में असमर्थ हैं। हमारी आर्थिक दशा बहुत खराब है, बढ़ी हुई मालगुज़ारी देने में हम बिल्कुल असमर्थ हैं। परन्तु किसी ने एक न सुनी। सरकार ने जो फैसला कर दिया उसके विरुद्ध भला कौन सुने? वह तो विधाता की खींची हुई भाग्य-रेखा के समान अमिट है!

६ सितम्बर सन् १९२७ को बारडोली ताल्लुक़ा के सब किसानों की एक सभा हुई। श्रीदादूभाई देसाई उसके सभापति थे। उसमें अनेक भाषणों द्वारा बढ़े हुए सरकारी लगान पर

घोर असन्तोष प्रकट किया गया। कौंसिल के कई मेम्बरों ने किसानों से स्पष्ट कहा—"हमसे जो कुछ हो सका, वह सब उद्योग कर चुके। अब अगर आप लोगों में सत्याग्रह करने और उससे होने वाले कष्ट सहन करने की शक्ति हो तो आप इसी हथियार को काम में लावें। श्रीवल्लभभाई से इस आन्दोलन का सञ्चालन करने के लिए प्रार्थना करें।" उसी दिन की सभा में जनता ने एक प्रस्ताव पास कर निश्चय किया कि सरकार को बढ़ा हुआ लगान न दिया जाय।

क्या लोग तैयार हैं ?

इसके बाद कुछ मुख्य मुख्य कार्य्य-कर्त्ताओं ने ताल्लुका में घूम-फिर कर इस बात की जाँच की कि यहाँ के लोग सत्याग्रह के लिए तैयार हैं कि नहीं। किसानों की एक और सभा में बढ़ा हुआ लगान न देने की बात तय हुई। इधर कुछ लोग श्री वल्लभभाई पटेल से सत्याग्रह का नेतृत्व ग्रहण करने की प्रार्थना के लिए गये।

थोड़े दिन बाद बाँकानेर में भाषण देते हुए वल्लभभाई ने कहा—"दयालजी भाई आप सब लोगों से मिल कर मेरे पास लौट आये। उन्होंने कहा कि लोग तो केवल उतना लगान देने से इन्कार करने के लिए तैयार हैं जो अभी बढ़ाया गया है। मैंने देखा कि ऐसी लड़ाई लड़ना तो पाखण्ड है। यह तो स्पष्ट कायरता है। शायद आपने सोचा होगा कि ज़मीन कुर्क होने

की, अथवा कोई भारी जोखिम न उठानी पड़े। इसलिए पुराना लगान तो सरकार को दे दें और बढ़ा हुआ लगान न दें, इससे सरकार पर ज़रूर कुछ असर पड़ेगा। पर आप विश्वास रखिए, यह सत्याग्रह नहीं कहा जा सकता। आप साढ़े चार लाख रुपये तो सरकार को दे दें और एक लाख न दें तो इससे सरकार का क्या बिगड़ सकता है? वह तो धीरे धीरे सब वसूल कर लेगी। यह जो आपको बिना जोखिम उठाये लड़ने को कहा जा रहा है, इसका कोई नतीजा न निकलेगा। इससे न बारडोली का भला हो सकता है, और न हिन्दुस्तान का।"

यह बात सुन कर कि बारडोली के लोग असमञ्जस में पड़े हैं, वे कुछ भी तय करने में असमर्थ हैं, वल्लभभाई ने, भाई कल्याणजी तथा .खुशाल भाई से कहा—"आप बारडोली जाइए, और गाँव गाँव में घूम-फिर कर देखिए कि लोग लड़ना चाहते हैं कि नहीं? अगर वे लड़ना न चाहते हों तो मैं उन्हें ज़बर्दस्ती नहीं लड़ा सकता। यदि वे यह समझ चुके हों कि इस समय सरकार से लड़ना ही धर्म है, तो लड़ने का तरीक़ा बताने की ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर है। अगर उन्हें लड़ाई के लिए नेता की तलाश हो तो मेरा धर्म है कि मैं उनका साथ दूँ।"

भाई कल्याणजी और खुशाल भाई ने बारडोली में घूम-फिर कर वहां की स्थिति का अध्ययन किया और वल्लभभाई से जाकर कह दिया कि लोग समझ रहे हैं कि सत्याग्रह ही

लड़ने का एक मात्र उपाय है, और बहुत से लोग इस प्रकार लड़ने के लिए तैयार भी हैं। इस पर वल्लभभाई ने उनसे कहा कि आप जाकर बारडोली में किसी दिन सब किसानों को इकट्ठा कर के मुझे सूचना दे दीजिए। मैं लोगों से बात-चीत कर के जान लेना चाहता हूं कि उनके मन में क्या है? वे चाहते क्या हैं?

मन की बात

४ फरवरी सन् १९२८ को बारडोली में ताल्लुके भर के सब किसानों की एक बड़ी सभा हुई। सूचना मिलने पर यथा समय वल्लभभाई भी आ पहुँचे। वे ही उस दिन की सभा के सभापति थे। सभा में बम्बई कौंसिल के तीन मेंबर श्रीभीमभाई नायक, श्रीदादूभाई देसाई तथा श्रीदीक्षित भी मौजूद थे। आज लोगों से उन्होंने कहा—"अब बाज़ी हमारे हाथ से चली गई। अब तो वल्लभभाई ऐसे सत्याग्रही ही आपकी सहायता कर सकते हैं, इसलिए इन्हींका सहारा लीजिए।"

वल्लभभाई ने सब कार्य्य-कर्त्ताओं और गाँवों के प्रतिनिधियों की जाँच की। ७९ गाँवों के आदमी उस दिन उपस्थित थे। खेती करने वाली सभी जातियों के प्रतिनिधि उनमें मौजूद थे। सब लोग अपनी ज़िम्मेदारी अनुभव करते थे। सभी ने एक स्वर से कहा कि बढ़ाया हुआ लगान अन्याय-पूर्ण है, उसे

हर्गिज़ अदा न करना चाहिए। वल्लभभाई ने अलग अलग एक एक आदमी से पूछ-ताछ की और इस प्रकार सभी आदमियों के मनोगत भावों को समझने का प्रयत्न किया। किसानों के इन प्रतिनिधियों में ३०० से ७०० रुपये तक मालगुज़ारी देने वाले लोग उपस्थित थे।

चार-पाँच गाँवों के आदमियों ने कहा कि पुरानी दर के अनुसार हम मालगुज़ारी दे दें, बाक़ी रुपये देखें सरकार कैसे वसूल करती है? बाक़ी सब गाँवों के प्रतिनिधियों की राय थी कि सरकार को लगान के नाम से एक कौड़ी भी न दो। इन सब लोगों के दिल मे सचाई थी। उन्होंने जो कुछ कहा उसके लिए वे मर मिटने को तैयार थे।

एक आदमी से पूछा गया कि क्या सचमुच तुम्हारे गाँव के लोग अन्याय के विरुद्ध सरकार से लड़ने और अनेक प्रकार के कष्ट सहने को तैयार हैं ? उसने बड़ी दृढ़ता से कहा—"ज़रूर।"

यह पूछने पर कि उनके पैर उखड़ गये तो तुम क्या करोगे, उसने उत्तर दिया—"मैं मरते दम तक डटा रहूंगा।"

श्रीवल्लभभाई अबसे बारडोली की सत्याग्रही सेना का पथ-प्रदर्शन करते हुए दिखाई देंगे, अतः यहीं से हम उन्हें 'सरदार' के नाम से पुकारेंगे। आजकल तो सारा देश उन्हें 'सरदार' के नाम से पुकारता है।

सरदार ने किसानों के प्रतिनिधियों को बहुत आगा-पीछा सुझाया। वे बड़ी गम्भीरता से बोले—"भाई, .ख़ूब सोच-समझ लो। अँगरेज़ सरकार बर्बाद करके तुम्हें मिट्टी में मिला देने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा देगी। तुम्हारे घर उजड़ जायँगे! चारों ओर से तुम पर विपत्तियों की घनघोर घटायें उमड़ उठेंगी। एक ओर तुम्हारी स्त्रियां दाने दाने को तड़पेंगी और दूसरी ओर तुम्हारे दुधमुँहे बच्चे एक एक बूँद दूध के बिना भूखों मरेंगे! तुम्हारा घर-बार कुर्क होगा। धन-माल क़ी ज़प्ती होगी! तुम हाथ-पैर बाँध कर जेल में बन्द कर दिये जाओगे। अगर हृदय को पत्थर बना कर यह सब दुखद दृश्य अपनी आँखों से देख सको तो इस कूचे में क़दम रखना, नहीं तो, चुपचाप अपने घर में जाकर बैठ रहो। अगर इस लड़ाई में जीत गये तो सारी दुनियां के सामने दिग-दिगन्त में तुम्हारी कीर्त्ति-पताका फहरावेगी और भारत के कोने कोने में सत्याग्रह का अभिनव सन्देश गूँज उठेगा।" आगे चलकर फिर सरदार ने कहा—"मेरे साथ कोई खिलवाड़ नहीं कर सकता। मैं किसी ऐसे काम में नहीं पड़ता जिसमें कोई ख़तरा या जोखिम न हो। जो लोग आपत्तियों को निमन्त्रण दें, उनकी सहायता के लिए मैं सदा तैयार हूँ।"

बारडोली में

बारडोली के लोग सत्याग्रह के युद्ध की घोषणा के लिए घड़ियाँ गिन रहे थे। एक एक क्षण उनके लिए कल्प की तरह बीत रहा था। सरदार ने सबके मनोगत भावों को समझकर आठ दिन तक उनसे इस प्रश्न पर अच्छी तरह फिर विचार कर लेने को कहा। आठ दिन बाद फिर सभा करने का निश्चय किया गया। लोग अपने अपने घर गये। सरदार वल्लभभाई अहमदाबाद चले गये। इस प्रकार सरदार के द्वारा बारडोली के सत्याग्रह-संग्राम का सूत्रपात होने के आसार पड़ गये।



अन्तिम चेतावनी

बारडोली के लोग बढ़ा हुआ लगान न देने के लिए सत्याग्रह करने पर उतारू थे। इधर सरदार वल्लभभाई ने एक सत्याग्रही की हैसियत से सरकार को अन्तिम चेतावनी देना उचित और आवश्यक समझा। उन्होंने ६ फ़रवरी १९२८ को बम्बई के गवर्नर सर लैस्ली विल्सन को एक पत्र लिखा। उसमें उन्होंने बारडोली की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा—

"सूरत ज़िले के बारडोली ताल्लुक़ा की जो नई जाँच हुई है उसमें २२ प्रति सैकड़ा लगान बढ़ाया गया है। इसी वर्ष उस पर अमल भी किया जायगा। जनता में बड़ी उत्तेजना फैल रही है। वह कहती है कि हमारे साथ भारी अन्याय हुआ है। इस बात पर विचार करने के लिए कि लगान की जो बढ़ती किसानों की दृष्टि में एकतरफा, अन्याय और अत्याचार-पूर्ण है, उसका विरोध किस प्रकार किया जाय, बारडोली ताल्लुक़ा के किसानों की एक सभा हुई

थी। उसमें ७५ से भी अधिक गाँवों के प्रतिनिधियों से मैं मिला। किसी गांव का एक भी प्रतिनिधि ऐसा नहीं था जो लगान की बढ़ती को अन्याय-पूर्ण न समझता हो। ७० से भी अधिक गांवों के प्रतिनिधियों ने यही निर्णय किया है कि जब तक इस मामले में न्याय न हो तब तक सारा लगान ही न दिया जाय।............

लगान के मामले में सरकार की जो नीति रही है, उससे अभागे गुजरात को बड़ी हानि सहनी पड़ी है। अहमदाबाद और खेड़ा ज़िले के कितने ही ताल्लुक़ों में इसके परिणाम स्पष्ट दिखाई देते हैं। सूरत की दशा भी उनसे अच्छी नहीं होती, पर वहां के बारडोली तथा कुछ अन्य ताल्लुक़ों में कपास बहुत होता है और गत महा युद्ध के कारण कपास का भाव बहुत चढ़ गया है। खेड़ा ज़िले का मातर ताल्लुक़ा, जो किसी समय बड़ा मालदार समझा जाता था, आजकल ऐसा बरबाद हो रहा है कि इस बरबादी से पनपने की उसकी कोई आशा नहीं है। उसी ज़िले के अहमदाबाद तथा अन्य कितने ही ताल्लुक़ों की यही हालत हुई जा रही है। यह सब सरकार की लगान-नीति के कारण हुआ है। यह बात सिद्ध की जा सकती है।"

आगे चल कर अपने इसी पत्र में सरकार की लगान-नीति को ग़लत और बेढंगी बतलाते हुए और सेटिलमेंट

अफ़सर की रिपोर्ट का भण्डाफोड़ करते हुए सरदार ने अन्त में लिखा—"ताल्लुके के साथ जो अन्याय हुआ है उसके सम्बन्ध में मैं अधिक लिखना नहीं चाहता। मेरी तो विनय केवल यही है कि लोगों पर न्याय करने के लिए, सरकार कम से कम नये बन्दोबस्त के अनुसार लगान वसूल करना अभी मुलतवी रखे और फिर एक बार सारे मामले की शुरू से जांच कर ले। इस जांच में लोगों को अपनी शिकायतें पेश करने का मौक़ा दिया जाय और यह वचन दिया जाय कि उनकी बातों पर उचित रूप से ध्यान दिया जायगा।"

यह पत्र सरदार ने बम्बई के गवर्नर के पास भेज दिया। उसमें उन्होंने सारी स्थिति स्पष्ट समझा दी। किसानों की आर्थिक दशा पर विचार न करके ज़बर्दस्ती लगान बढ़ाने का जो भयङ्कर परिणाम हो सकता है, वह भी उन्होंने सरकार के सामने रख दिया। परन्तु सरकार भला क्यों सुनती? उसे तो बारडोली का ताल्लुक़ा अपने अफ़सरों की रिपोर्ट के अनुसार हरा-भरा और धन-धान्य से परिपूर्ण दिखाई देता था! किसानों के सरदार की विनय-भरी प्रार्थना पर ध्यान देने की उसने तनिक भी पर्वा न की।

लगान वसूल करने की तारीख़ आ पहुंची। सरकार की ओर से गांव गांव में लगान अदा कर देने की डुग्गी पिटवा

दी गई। इस पर भी लगान अदा करने की नियत की हुई १२ फ़रवरी को तहसील में एक कानी कौड़ी भी न पहुंची! सरकारी आदमी लगान का इन्तज़ार करते ही रहे।

बम्बई के गवर्नर सर लेस्ली विलसन की ओर से सरदार को कोरा जवाब दे दिया गया। गवर्नर के प्राइवेट सैक्रेटरी ने उन्हें लिख दिया—"आपका पत्र गवर्नर साहब के सामने पेश किया गया था। अब उसका विचार करके, उचित कार्रवाई करने के लिए आपका पत्र मालगुज़ारी के महकमे में भेज दिया गया है।"

इससे स्पष्ट है कि सरदार की चेतावनी की सरकार ने तनिक भी पर्वा नहीं की। उनके पत्र की बिल्कुल उपेक्षा की गई। इस उपेक्षा का परिणाम भी, जो होना था वही हुआ। इसी उपेक्षा के कारण आगे चल कर सरकार की सारी शान और शेख़ी धूल में कैसे मिल गई, उसे सरदार वल्लभभाई से समझौता करने को कैसे विवश होना पड़ा, इसे पाठक आगे पढ़ेंगे।

रण-भेरी

Weaklings have no place in the world. It is a sin to be weak. Let us be strong socially, physically, educationally, and politically, and then, and then alone India will become a free nation.

निर्बलों का दुनियां में कहीं ठिकाना नहीं। निर्बल होना पाप है। हमें सामाजिक, शारीरिक, शिक्षा-सम्बन्धी और राजनैतिक दृष्टि से सशक्त होजाने दो, तब, हां केवल तभी, भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र बन सकेगा।

स्वामी विवेकानन्द

जब अहमदाबाद में बैठे हुए सरदार वल्लभभाई सरकार के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे, तब स्वयंसेवक बारडोली में घूम घूमकर सत्याग्रह के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करा रहे थे। एक एक करके ताल्लुक़े भर के सारे गाँव सत्याग्रह के लिए तैयार हो गये। सरदार को तो ऐसे सौ आदमियों की ज़रूरत थी जो मरने के लिए तैयार हों। परन्तु यहां आठ दिनों में तो

बारडोली की बिल्कुल काया ही पलट गई। सौ की जगह हज़ारों आदमी मरने के लिए तैयार हो गये।

पवित्र उद्गार

१२ फ़रवरी सन् १९२८ को बारडोली में ताल्लुक़े भर के किसानों की विराट सभा हुई। उसमें सरदार वल्लभभाई ने लोगों को अन्तिम चेतावनी दी और मामले पर बड़ी सावधानी से विचार करने को कहा। वे बोले—

"अब यह आशा करना व्यर्थ है कि हमारी कहीं सुनवाई होगी। अब तो केवल हमारे लिए एक ही रास्ता है और वही प्रत्येक जाति के लिए है। वह है शक्ति का शक्ति से सामना करना। सरकार के पास हुकूमत है, तोपें और बन्दूकें हैं। आपके पास सत्य का बल है, कष्ट सहने की शक्ति है। ....ज़ालिम से ज़ालिम सत्ता भी उस प्रजा के सामने नहीं टिक सकती जिसमें एकता है। यदि आपमें सचमुच ऐसी एकता हो तो मैं निश्चयपूर्वक कहता हूं कि सरकार के पास ऐसा कोई साधन नहीं जिससे आपके निश्चय और एकता को वह तोड़ सके।...... .....इस लड़ाई में जो ख़तरा है उसे याद रखिए। जिस काम में जितना बड़ा ख़तरा होता है वह कार्य उतना ही अधिक महत्त्वपूर्ण होता है और उससे उतने ही बड़े परिणाम निकलते हैं। ज़रा कहीं सख़्ती

हो, और आपने अपना क़दम पीछे हटा लिया तो केवल गुजरात को ही नहीं, बल्कि सारे देश को आप हानि पहुँचावेंगे। इसलिए जो कुछ भी निश्चय करें, ईश्वर को साक्षी देकर करें और उस पर दृढ़ रहें।

यह कोई लाख, सवा लाख या ३० वर्ष के ३५ लाख रुपये का ही सवाल नहीं, यह तो सत्य और असत्य का सवाल है, स्वाभिमान की रक्षा का प्रश्न है। इस राज्य में किसानों की कोई नहीं सुनता, इस प्रथा को तोड़ने का सवाल है।......... अपने दिल पर क़ाबू करके, सत्य पर अटल रह कर, संयम के सहारे आपको सरकार से लड़ाई लड़नी है। अभी अफसर आवेंगे, आपको ख़ूब सतावेंगे, उभाड़ेंगे, गन्दी गालियाँ बकेंगे, और आपकी जो कमज़ोरियाँ उन्हें दिखाई देंगी उन पर अक्रमण करके आपको गिराने की कोशिश करेंगे। परन्तु आप अपनी टेक न छोड़ दें। सरकार ज़मीन ज़ब्त करे, कुर्क करे, खेत पर जाकर ग़ल्ले के लिए नीलाम की बोलियाँ बोले, जो कुछ भी अधिकारियों को सूझे, वे सब करें; परन्तु वे आपसे कोई ऐसा कार्य न ले सकें जो आपकी इच्छा के विरुद्ध हो, बस, यही इस लड़ाई की कुञ्जी है।"

इतना कह चुकने पर गवर्नर को लिखे पत्र की चर्चा करते हुए सरदार ने फिर कहा—"यदि आपकी जगह पर

मैं होऊं तो स्पष्ट कह दूं कि चाहे इस शरीर के टुकड़े टुकड़े हो जायं, मैं तो ऐसे लगान की एक पाई भी न दूंगा। मुझे विश्वास है कि बारडोली के वे किसान, जिन पर किसी समय सारे देश की आंखें लगी हुई थीं, इस बार अपनी अद्भुत वीरता का परिचय देकर फिर समस्त देश का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेंगे और उसकी बधाई के पात्र बनेंगे।''

सरदार वल्लभभाई के पवित्र उद्गार प्रत्येक किसान के कानों में गूंज उठे। इन उद्गारों ने सीधे-सच्चे किसानों के हृदयों में खलबली मचा दी। वे अपनी मान-मर्यादा के लिए मरमिटने को उतावले हो उठे।

भीष्म-प्रतिज्ञा

सरदार के भाषण के बाद कई सैनिकों के समर्थन और अनुमोदन कर चुकने पर यह प्रस्ताव सर्व- सम्मति से स्वीकृत हुआ—

''बारडोली ताल्लुक़ा के किसानों की यह सभा प्रस्ताव करती है कि हमारे ताल्लुक़ा के लगान में सरकार ने जो वृद्धि की है वह अनुचित अन्याय, और अत्याचार-पूर्ण है। इसलिए जब तक सरकार वर्तमान लगान को ही सम्पूर्ण लगान की तरह लेने, अथवा किसी निष्पक्ष कमेटी

के द्वारा लगान-वृद्धि के मामले की फिर से जाँच कराने के लिए तैयार न हो, तब तक हम सरकार को लगान बिलकुल न दें। सरकार हमसे ज़बर्दस्ती लगान वसूल करने के लिए ज़प्ती, कुर्की आदि जिन उपायों से काम ले उनसे होने वाले कष्टों को हम शान्ति से सहन करें। बढ़ाये हुए लगान को छोड़ कर, यदि सरकार पुराना लगान ही लेना चाहे तो हम उसे फौरन अदा कर दें।"

प्रस्ताव पास होजाने के बाद साबरमती-आश्रम के इमाम-साहब अब्दुलक़ादिर बावजीद ने क़ुरानशरीफ़ की आयतें पढ़कर ख़ुदा की इबादत की। उनके बैठ जाने पर श्री-महादेव भाई देसाई ने सुमधुर ध्वनि से कबीर का यह गीत गाया—

शूर संग्राम को देख भागे नहीं
देख भागे सोई शूर नाहीं—शूर०
काम अरु क्रोध अरु लोभ से जूझना
मंडा घमासान तहं खेत माहीं—शूर०
शील अरु शौच सन्तोष साथी भये
नाम समशेर तहं खूब बाजे—शूर०
कहत कबीर काऊ जूझि है सूरमा,
कायर औ भडे तहं तुरत भाजे—शूर०

चारों ओर सन्नाटा छा गया। किसानों के दिल बांसों

उछल रहे थे। हृदय में उत्साह की उमङ्गें उमड़ रही थीं। उनकी नस नस में सरदार वल्लभभाई ने जीवन और जागृति की बिजली दौड़ा दी थी। आज कर्मक्षेत्र में खड़े होकर उन्होंने अपने पुनीत अधिकारों की रक्षा के लिए उस ज़बर्दस्त सरकार से लड़ाई लड़ने का निश्चय किया था, जिसकी फ़ौज-पल्टन और जङ्गी जहाज़ी बेड़े की धाक दुनिया पर जमी हुई है। सदियों से पिसे हुए दीन-हीन किसान, सरदार वल्लभभाई के सेनापतित्व में, अपने ऊपर होने वाले अन्याय और अत्याचार का दृढ़तर प्रतिरोध करने के लिए शान्तिमय विद्रोह की रण-भेरी बजाकर अपने अपने घर चले गये।

युद्ध-शिक्षा

जिस विद्रोह की रण-भेरी बारडोली में बज चुकी थी, सरदार ने चारों ओर उसकी आग फैलाने के लिए दौरा शुरू कर दिया। उन्हें ताल्लुक़े भर में विद्रोह की आग ही नहीं फैलानी थी, बल्कि सत्याग्रह-संग्राम को एक सङ्गठित और नियंत्रित रूप देना था। अपढ़-कुपढ़ किसानों को युद्ध-शिक्षा देनी थी। वे इसी काम में जुट गये। बारडोली से चल कर रात को वे बाँकानेर पहुँचे। वहाँ १५-२० गाँवों के लगभग २ हज़ार आदमी इकट्ठे हुए। उनकी सभा में सरदार वल्लभभाई का बड़ा प्रभावशाली भाषण हुआ। उन्होंने कहा—

"सरकार आपकी अच्छी तरह परीक्षा लेगी। उसे ऐसा करने का हक़ है। अगर उससे लड़ना है और इस लड़ाई को आदर्श लड़ाई बनाना है तो सारे ताल्लुक़े को हमें जगा देना पड़ेगा। सारे वायुमण्डल को बदल देना होगा। आप ये शादियाँ लेकर बैठे हैं, इन्हें जल्दी समाप्त करना

होगा। जहां लड़ाई छिड़ गई है वहां शादियों के लिए कहाँ समय होता है? कल सुबह से लेकर शाम तक मकानों में ताले लगा कर घूमना पड़ेगा। सजग होकर लड़ाई में लड़ने वाले सिपाहियों का सा जीवन बिताना पड़ेगा। बालक, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सभी समय को समझ लें। अमीर और ग़रीब सब एक हो जावें और इस तरह मिलकर काम करें मानों एक ही शरीर हो। रात होने पर सब लोग घर लौटें। ज़प्तियाँ करने के लिए सरकार को गांव या ताल्लुक़े से आदमी तो लाने ही पड़ते हैं? आप ताल्लुक़े में ऐसी हवा बहा दीजिए कि इन कामों के लिए सरकार को एक भी आदमी न मिलने पावे। मैंने अपनी आंखों से अब तक ज़प्ती करने वाला ऐसा कोई अफ़सर नहीं देखा जो ज़प्त की हुई चीज़ें अपने सर पर उठा कर ले जासके। सरकारी अफ़सर पक्क होते हैं। पटेल, मुखिया, तलाटी आदि कोई भी सरकार की सहायता न करें। उनसे वे स्पष्ट कह दें कि गांव और ताल्लुक़े की इज्ज़त के साथ हमारी भी इज्ज़त है। जिसके कारण ताल्लुक़े की आबरू जाय वह मुखिया कैसा? इस तरह हम ताल्लुक़े में ऐसी बयार चला दें जिससे स्वराज्य की सुगंध चारों ओर फैल जाय।"

विजय की कुञ्जी

कुर्की का अर्थ बतलाते हुए सरदार ने कहा—"कितने

ही लोगों को डर है कि हमारी ज़मीनें कुर्क हो जायंगी। परन्तु मैं पूछता हूं कि क्या कोई आपकी ज़मीनों को सर पर उठा कर सूरत या विलायत ले जायगा? ज़मीनों को कोई कुर्क, या जो चाहे सो करे। सरकारी क़ाग़ज़ों में कुछ थोड़ा हेर-फेर होगा। यदि आपमें एकता होगी तो सारे ताल्लुक़े में ऐसा बन्दोबस्त हो जायगा कि कोई दूसरा आदमी आपके खेत में हल न चलाने पावे।

युद्ध-घोषणा होचुकी है। अब हर एक गांव को फ़ौजी छावनी समझिएगा। प्रत्येक गाँव की ख़बरें रोज़ ताल्लुक़े के केन्द्र में पहुँच जानी चाहिए और वहां से जो हुक्म आवें वे उसी दिन गांव गांव में पहुँच जावें। हमारा अनुशासन और प्रबन्ध ही विजय की कुञ्जी है।

सरकार कहती है कि तुम लोग सुखी हो, बड़े बड़े मकान हैं, खेती आबाद है। पैसा देना नहीं चाहते, इसलिए बदमाशी करते हो; तुम्हारे अगुआ झूठे हैं। मैं कहता हूं कि ऐसे अपमान सह कर रुपये देने से तो मर जाना अच्छा है। मैं इस बात को नहीं सह सकता कि सरकार गुजरात के किसानों को बदमाश कहे। जब तक सरकार इन बातों को भूल न जावे तब तक आपको लड़ना है। अगर ज़रूरत हो तो मरमिटो। सरकार से कह दो कि तेरी बातें झूठी हैं। हिम्मत हो, तो आ देख, हम साबित करके दिखाते हैं।

हमारे युवक इन बातों को समझ लें और गांव गांव घूमकर अपने भाइयों और बहिनों को समझा दें ।"

इस प्रकार सरदार वल्लभभाई बांकानेर, वराड, वालोद आदि गांवों में दौरा करके शान्तिमय विद्रोह की आग सुलगाने लगे। उन्होंने इसी उद्योग में रात-दिन एक कर दिया। एक जगह स्थिरता से बैठना उनके लिए असम्भव हो गया। वे एक साहसी 'विद्रोही' के रूप में बारडोली ताल्लुक़ा में दौड़ने लगे। सरदार सचमुच ही अपने गले में झोली डाल कर निकल पड़े और ताल्लुक़े भर में द्वार द्वार अलख जगा कर वे लोगों को सत्याग्रह के युद्ध की शिक्षा देने लगे।

सरदार का राज

सरदार वल्लभभाई ने ताल्लुका भर में दौरा कर सत्याग्रह के युद्ध की मोर्चा-बन्दी कर दी। प्रत्येक गांव में सैनिकों का एक दल बन गया। पहले बारडोली में चार आश्रम थे। अब सरदार ने आठ नई छावनियां और खोल दीं। उन्होंने बारडोली ताल्लुके को पांच मुख्य भागों में बांट दिया। प्रत्येक भाग का एक-एक मुखिया बना दिया गया। सबके सेनापति सरदार वल्लभभाई थे।

कठोर अनुशासन

सत्याग्रह-संग्राम का श्रीगणेश होगया। ताल्लुके भर में सब गांवों का सुदृढ़ सङ्गठन था। सर्वत्र समाचार, और आवश्यक आज्ञाएं पहुंचाने का बहुत अच्छा प्रबन्ध था। बारडोली सत्याग्रह का केन्द्र था। यहां एक प्रकाशन-विभाग और सत्याग्रह-कार्य्यालय खोल दिया गया था। स्वयंसेवकों की टोलियां इधर उधर दौड़कर प्रबन्ध करने में संलग्न थीं। 'सत्याग्रह-समाचार' नामका एक दैनिक पत्र प्रकाशित होता

था। वह जनता में प्रतिदिन मुफ़्त बाँट दिया जाता था। सेना-नायक तथा विभाग-पति समय समय पर ताल्लुके में दौरा कर के लोगों को आवश्यक बातें बतलाते थे।

सत्याग्रह-दफ़्तर में कई मोटरें थीं। वे ताल्लुके भर में दौड़ दौड़ कर नेताओं और कार्य्य-कर्त्ताओं को यथा स्थान पहुँचा देती थीं। दैनिक डाक और 'सत्याग्रह-समाचार' के बंटने का बड़ा उत्तम प्रबन्ध था। २४ घंटे के भीतर प्रत्येक आवश्यक बात पर सरदार वल्लभभाई का हुक्म विभाग-पति के पास पहुँच जाता और उस पर तुरन्त ही अमल होने लगता था। प्रधान कार्यालय में सरदार के पास प्रति क्षण ताल्लुके की ख़बरें पहुँचती थीं। सब जगह कड़ा प्रबन्ध था। किसी भी काम में कहीं शिथिलता का नाम भी न था। प्रत्येक सैनिक चुपचाप अपने अफसर का हुक्म मानने को बाध्य था। सरदार अपने साथी विभाग-पति और दल-पतियों से बड़ी सख़्ती से काम लेते थे। मजाल क्या कि, बारडोली ताल्लुके में बिना सरदार की आज्ञा के एक पत्ता भी हिले। चारों ओर सब लोग कठोर अनुशासन के एक दृढ़ बन्धन में बंधे हुए थे।

बारडोली का दुर्ग

चारों ओर व्यवस्थित ढंग से मोर्चा-बन्दी होजाने के कारण बारडोली का रूप एक सत्याग्रही दुर्ग के समान हो

गया था। उस दुर्ग में बम के गोलों, तोपों, बन्दूकों और गोली-बारूद का नाम नहीं था। वह तो गांधी-युग की सत्याग्रह की लड़ाई का एक आदर्श दुर्ग था। उस दुर्ग के रक्षक हथियारों का प्रयोग नहीं करते थे। वे गांवों के चारों ओर पहरा देते रहते। जैसे ही किसी पटवारी या अधिकारी को वे देखते वैसे ही बिगुल बजा कर सारे गांव को सावधान कर देते। उसी दम गांव में चारों ओर सन्नाटा छा जाता। किसान लोग मकानों के बाहर से ताले लगा कर भीतर घुस जाते। अधिकारियों को गलियाँ सुनसान और निर्जन दिखाई देतीं।

जब ज़मीन का लगान वसूल करने के लिए सरकारी अफ़सर माल कुर्क या ज़ब्त करने जाते तब मकानों के दरवाज़ों में ताले लटकते हुए देखते। ज़ब्ती का सामान पहुँचाने या कुर्की पर बोली बोलने वाला तो अलग, वहां तो उससे कोई बात करने वाला तक नहीं मिलता था। ज़ब्त किया हुआ माल मज़दूर के अभाव में योंही पड़ा रहता था।

सरकारी अफ़सरों को अगर किसी चीज़ की ज़रूरत होती तो गांवों में ढूंढ़े भी उन्हें नहीं मिलती थी। हार कर उन्हें आवश्यक चीज़ों के लिए सत्याग्रह-छावनियों में आकर शरण लेने को विवश होना पड़ता था। इन्हीं सब बातों को देख कर 'टाइम्स' अख़बार के सम्वाद-दाता को कहना पड़ा था

कि बारडोली से अंगरेज़ सरकार का राज उठ चुका है, वहां तो बोलशेविकों का प्रभुत्त्व जम गया है और श्रीवल्लभभाई पटेल उसके कर्त्ता-धर्त्ता लेकिन हैं।

बात सचमुच कुछ ऐसी ही थी। जिन लोगों ने बारडोली में सरदार वल्लभभाई की प्रभुता और सरकारी अफ़सरों की ज़रा ज़रा सी बात के लिए मिट्टी पलीद होते देखी है वे निस्सङ्कोच यही बात कहते हैं। सरदार ने अपनी अद्भुत बुद्धि, साहस, कार्य्य-पटुता और असाधारण आत्म-निष्ठा से बारडोली के लोगों के हृदय पर अधिकार कर लिया था। घर घर में उनके आत्मत्याग की पूजा होती थी। सर्वत्र उन्हींकी तूती बोलती थी। इसीसे कहते हैं कि बारडोली में सचमुच सरदार वल्लभभाई का राज था। अंगरेज़ सरकार तो वहां के वायु-मण्डल से दूध की मक्खी की तरह अलग निकाल कर फेंक दी गई थी।

बलिदान के पथ में

यदि राज-सत्ता अत्याचारी हो तो किसान का सीधा उत्तर है—
"जा जा, तेरे ऐसे कितने ही राज मैंने मिट्टी में मिलते देखे हैं।"

वल्लभभाई पटेल

लगान चुकाने का दिन बीत गया, पर सरकार के ख़ज़ाने में एक पैसा भी वसूल होकर नहीं पहुँचा। सरकारी अफ़सर लोगों के पास लगान वसूल करने जाते, पर अपना सा मुंह लेकर लौट आते थे। लोग सब जगह यही उत्तर देते थे कि जब सरदार वल्लभभाई हुक्म देंगे तभी लगान देंगे। सरकार की ओर से धमकियों के नोटिस दिये गये। किसानों को धमकाया गया कि अगर वे लगान न देंगे तो उनकी ज़मीन जायदाद आदि ज़प्त कर ली जायगी। इधर किसानों ने सभाएं करके निश्चय कर लिया कि अगर किसी आदमी के यहां माल, आदि की ज़प्ती हो तो कोई आदमी गवाह न बनें। अधिकारियों को ठहरने को मकान, सवारी आदि न दें। बारडोली के किसानों की ज़प्त की हुई ज़मीन कोई आदमी न जोते और

न किसी दूसरे से जोतवाये। अगर किसी को ज़मीन मुफ़्त मिलती हो तो भी कोई न ले। इस प्रकार किसानों के अद्भुत प्रबन्ध और अनुशासन से सरकारी अफ़सरों के कान खड़े होगये।

इसी बीच में सरदार वल्लभभाई और बम्बई के गवर्नर के रेवेन्यू सैक्रेटरी के बीच पत्र-व्यवहार होता रहा। वह सरदार के मत्थे किसानों को बहकाने का दोष मढ़ रहा था और सरदार सरकार की लगान सम्बन्धी रक्त-शोषणी नीति का भण्डाफोड़ करते हुए उसका मुंह-तोड़ उत्तर दे रहे थे।

बारडोली की देवियाँ भी सत्याग्रह के युद्ध में कूद पड़ीं। वे इस संग्राम में बराबर पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिला कर काम करने लगीं। इस का सारा श्रेय था बाहर से आने वाली कुमारी मीठू बहिन पेटिट, श्रीमती सूरज बहिन मेहता आदि अनेक देवियों को। उन्होंने बारडोली के ताल्लुक़े भर में घूम घूम कर अपनी सैकड़ों बहिनों के कानों तक जीवन और जागृति का सन्देश पहुंचाया था।

वालोद के तहसीलदार ने वहां के दो साहूकारों को किसी तरह अपनी ओर फोड़ लिया। बाद में वह उनके यहाँ ज़ब्ती करने गया। वह एक साहूकार के यहां से ७८५ रुपये और दूसरे के यहाँ से १५०० रुपये नक़द वसूल करके चलता

बना। कहते हैं कि उन दोनों साहूकारों ने तहसीलदार को देने के लिए रुपये पहले से तैयार करके रख लिये थे और सत्याग्रही लोगों के नियम के अनुसार, ज़ब्ती के लिए आने वाले अफ़सर को देखकर उन्होंने अपने घर का दरवाज़ा बन्द नहीं किया था। आग की चिनगारी की तरह यह बात सब लोगों में फैल गई। इस पर दोनों साहूकारों का सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया। सरदार के कानों में भी यह ख़बर पहुँची। वे वालोड पहुँचे। एक भारी सभा में भाषण देते हुए इस घटना के सम्बन्ध में सरदार ने कहा—

"ऐसी बातें हमारे इस युद्ध को शोभा नहीं देतीं। ऐसे छल से, न तो हमारे नेता धोखा खा सकते हैं, और न सरकार ही ऐसी भोली है जो उसे धोखा दिया जा सके। आप इस आवेश में कुछ बुरा-भला न कर बैठिएगा। इस तरह डर दिखाने से कोई कायर शूर नहीं हो सकता। हमें सत्याग्रही का धर्म नहीं छोड़ना चाहिए। वह बहुत कठिन है। क्रोध के लिए तो उसमें कहीं जगह ही नहीं है। यह लड़ाई आपस में लड़ने के लिए नहीं छेड़ी गई है। निर्बल आदमियों को पैरों तले रौंदने के लिए हमने यह युद्ध नहीं छेड़ा है। यह मानना झूठ है कि जिसके पास धन है, ज़ीन है, वह बहादुर है। इनका जैसा जीवन है, उसे देखकर तो हमें इन पर दया आनी चाहिए। अपढ़-कुपढ़ ग़रीब लोगों का गला काट-काट

कर तो इन्होंने ज़मीन इकट्ठी की है। इन्हीं ज़मीनों पर ख़ूब मुनाफ़ा लेकर किराये पर उठा दिया है। इनके ऊंचे किराये के आँकड़ों को देखकर ही सरकार ने इनके पाप के फलस्वरूप सारे ताल्लुक़े पर लगान बढ़ा दिया है।"

अन्धेरगर्दी

इसके बाद तो बारडोली में ज़ब्ती और कुर्कियों का ताँता बंध गया। जानवर ज़ब्त होने लगे। किसानों का नाज ज़ब्त किया जाने लगा। इस अन्धेरगर्दी के कारण बारडोली का वातावरण एकदम त्रासमय हो गया। जब मकान पर सामान न मिलता तब अधिकारी रास्ता चलते हुए कपास की गाड़ियों को और जीन में पहुंचे हुए माल को ज़ब्त कर लेते। वालोड की दोराबजी सेठ की सास नवाजबाई पर ज़मीन का लगान वसूल करने के लिए, कुछ सरकारी अफ़सरों ने उनकी शराब की दुकान पर चढ़ाई की। उन्होंने ३०० रुपये के लगान के लिए २ हज़ार रुपये की शराब ज़ब्त की। परन्तु सवारी आदि न मिलने के कारण ज़ब्त की हुई शराब के पीपों को वहां से वे उठाकर कैसे ले जाते? हार कर वहीं गोदाम में ताला डालकर उन पीपों को बन्द करके छोड़ गये। दोराबजी ने सरकार को इस अन्धेर की सूचना देते हुए लिखा—"दुकान पर सरकारी ताला पड़ा है, इसलिए मेरी

सारी विक्री बन्द है। इसकी पूरी ज़िम्मेदारी सरकार के ऊपर है। ज़ब्त किया हुआ माल उठाकर गोदाम ख़ाली कर दो, नहीं तो ५ रुपये प्रतिदिन के हिसाब से मकान का किराया देना पड़ेगा।" इसका नतीजा यह हुआ कि ऊपर से ज़ब्ती के अफसरों पर फटकार पड़ी और वे गोदाम का ताला खोल, ज़ब्त की हुई शराब के पीपों को वहीं छोड़ कर चले जाने को विवश हुए! बारडोली में वल्लभभाई का राज था! अफसरों के द्वारा ज़ब्त की गई शराब के पीपों को भला कौन उठा कर ले जाता?

जानवर नीलाम किये गये। अधिकारियों के नीलाम का माल लेने के लिए बाहर से कसाई आये। वालोड में एक तहसीलदार ने ४४ भैंसें कसाइयों के हाथ केवल ३३५ रुपये में बेच दीं! इसी प्रकार रुपये का माल एक पाई में ज़ब्त कर दिया जाता था।

बलिदान की बाढ़

सरकारी हाकिमों ने बारडोली में अपने आप अपनी दुर्गति कराई। बड़े से बड़े हाकिम को सवारी के लिए मोटर या मामूली गाड़ी न मिलती थी। किराये पर मोटर चलाने वालों के लाइसेंस ज़ब्त किये गये। सरकारी शान को बचाने के लिए बारडोली में ऐसे ऐसे ज़ुल्म

किये गये, जिन पर किसी भी सभ्य सरकार को लज्जा से अपना सिर नीचा कर लेना पड़े। अफ़सरों के काम में रुकावट डालने के जुर्म में श्रीरविशङ्कर भाई को ५ महीने १० दिन की सख़्त सज़ा दे दी गई। यह बारडोली का पहला बलिदान था। रविशङ्कर भाई की सज़ा पर सरदार वल्लभ-भाई ने कहा—

"रविशङ्कर मेरे दल में एक श्रेष्ठ से श्रेष्ठ सेवक हैं। इससे बढ़कर आहुति मैं इस सत्याग्रह-युद्ध में नहीं दे सकता।" इसके बाद एक के बाद दूसरा आदमी गिरफ़्तार होने लगा।

रविशङ्कर भाई के बाद श्रीसम्मुख लाल, शिवा नन्द, श्री अमृतलाल आदि सरदार के कुछ अन्य वीर सैनिक ६ और ४—६ महीने की सज़ायें देकर जेल भेज दिये गये। सरदार ने जेल गये हुए सैनिकों को बधाई देते हुए कहा—"आज यह जो सत्य का संग्राम छिड़ा हुआ है इसमें वालोड को सबसे आगे देखकर मेरा हृदय आनन्द से खिल उठा है। वालोड के लिए मुझे गर्व न हो तो और किसे होगा? सरकार जेल के मेहमान चाहती है। आप उसे मुंह माँगे मेहमान देना।" आगे चल कर अपने सैनिकों को उत्साह दिलाते हुए सरदार ने कहा—"जिसके शरीर में जवानी का जोश और देश के लिए कसक है वह १५ दिन में मर्द बन सकता है! क्या आप जानते हैं कि सरकार रंगरूटों की भरती कैसे करती है?

वह बीस-बीस रुपये मासिक पर 'रोज.' जंगली जानवरों के ऐसे आदमियों को पकड़ पकड़ कर ले जाती है। इसके लिए वह दलाल रखती है जो २–४ रुपये दलाली लेकर ऐसे ऐसे आदमियों को फंसा कर सरकार के सुपुर्द कर देते हैं। उन्हींके हाथ में बन्दूक देकर ६ महीने में ही सरकार उन्हें ऐसा बना देती है कि यही किराये के टट्टू तोपों के मुंह पर धावा करने को दौड़ते हैं!"

इस प्रकार सरदार वल्लभभाई बारडोली में बलिदान के पथ में खड़े हुए लोगों को अधिक से अधिक त्याग करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। इधर उनके वीर सैनिक हर्ष से नित्य नई विपदाओं का स्वागत करने लगे। उस समय ता बारडोली के कोने कोने में यह पवित्र ध्वनि गूंज रही थी—

नहिं छोड़ूं रे बाबा राम नाम।
एक राम न छोड़ूं गुरु हि गार,
मोको घाल जार चाहे मार डार। नहिं छोड़ूं०

———

'नादिरशाही'

"१६० रुपये की लागत के लिए हज़ारों रुपये की ज़मीन को कुर्क कर लेने का नाम है नादिरशाही। इस राजनीति में चांटे के जवाब में चांटा नही मिलता, बल्कि फांसी होती है। एक रुपये के लिए एक हज़ार छीनने वाले को हम ज़ालिम कहते हैं—उसे दशकंधर रावण कह सकते हैं।"

महात्मा गांधी

सत्याग्रह-संग्राम के समय महात्माजी के शब्दों में बारडोली में नादिरशाही ज़माना आगया था। अधिकारी जनता को सताने के लिए नित्य नई चालें चलते थे। लगान वसूल करने के लिए उन्होंने घृणित से घृणित उपायों से काम लिया। बारडोली में अंगरेज़ी राज की छत्र-छाया में पठान-राज्य क़ायम होगया। उन जंगली पठानों ने निहत्थे किसानों पर, उनकी सीधी-सादी बहिन-बेटियों पर जो मनमाने ज़ुल्म किये उनकी एक लम्बी दर्दनाक कहानी है। उन ज़ुल्मों पर अनेक बड़ी बड़ी पोथियां बन चुकी हैं। पठानों ने अपनी लाठियों से किसानों के सर फोड़े, उनके जानवर

घायल किये, बन्द मकानों के ताले तोड़े, चोरी की, और घरों में घुस कर स्त्रियों को सताया और उनका घोर अपमान किया! यह सब किया गया, न्याय और व्यवस्था के नाम पर! जिस शासन में 'न्याय और व्यवस्था' के ठेकेदार स्वयं ही अपनी छत्र-छाया में ऐसे बर्बरता-पूर्ण कलुषित कर्म करावें, उसका निकट भविष्य में जल्दी से जल्दी अन्त हो जाय तो ताज्जुब ही क्या है?

सरदार वल्लभभाई ने पठान-राज्य के हृदय हिला देने वाले अत्याचारों को अपनी आंखों से देखा। पठानों के इन कलुषित कामों से उनके हृदय में बड़ी चोट लगी। परन्तु उन्होंने सदा इस बात का प्रयत्न किया कि जंगली पठानों की अमानुषिक करतूतों से कहीं लोग आपे से बाहर होकर कोई ऐसा काम न कर बैठें जो सत्याग्रह की मर्यादा के विरुद्ध हो। उन्होंने लोगों को बराबर यही समझाया कि शान्त रह कर मैदान में डटे रहो, इन नादिरशाही ज़ुल्मों का जल्दी ही अन्त होगा।

घृणित आक्षेप

कमिश्नर ने सूरत के एक डाक्टर एदल बेहरामजी को पत्र लिख कर सत्याग्रह-आन्दोलन के सञ्चालकों पर बड़े घृणित आक्षेप किये। आन्दोलनकारियों को उन्होंने "उपद्रवियों"

के नाम से पुकारा। उस पत्र से प्रकट होता था कि जनता की रक्षा और भलाई की चिन्ता जितनी कमिश्नर को है उतनी शायद ही दुनियाँ में किसी को होगी! मानों कमिश्नर साहब जनता की चिन्ता करते करते दिन पर दिन दुबले होते जा रहे थे! बारडोली की एक सभा में कमिश्नर के घृणित आक्षेपों का उत्तर दिया गया। सरदार वल्लभभाई ने अपने एक भाषण में कहा—

"यदि मि० स्मार्ट अपनी बातें जनता के सामने रखना चाहते हों तो मैं ताल्लुके के १७ हज़ार किसानों को इकट्ठा किये देता हूं। वे आवें और किसानों को समझावें। जिन कार्यकर्त्ताओं को आज वे इन शब्दों में याद करते हैं, उनके किये उपकारों को भी तो याद करें? अगर यही 'उपद्रवी' खेड़ा के किसानों की सहायता करने न जाते तो इस साल वे ज़मीन से नई फसल न काट पाते और न सरकार उनसे लगान ही वसूल कर पाती।"

महात्मा गांधी ने 'यङ्गइण्डिया' में एक लम्बा लेख लिखकर कमिश्नर के आक्षेपों का खण्डन किया और उसे फटकारा कि अगर उसमें कुछ भी शर्म है तो इन आक्षेपों के लिए खुले तौर पर क्षमा माँगे। परन्तु अधिकारी तो भयङ्कर से भयङ्कर अपराध करने पर भी क्षमा मांगना तो दूर, यह तक मानने को तैयार नहीं होते कि उनसे कोई 'अपराध' बन पड़ा है!

न्याय और व्यवस्था की दुहाई देकर वे जो कुछ करते हैं, सो जनता की भलाई के भाव से प्रेरित होकर ठीक ही करते हैं ! इस देश की ग़रीब जनता न्याय के इन ठेकेदारों की काली करतूतें कभी भूल नहीं सकती ।

सरदार का सङ्कोच

सरदार वल्लभभाई आरम्भ में यह नहीं चाहते थे कि बारडोली के आन्दोलन को अखिल भारतीय रूप दिया जाय। इसीसे देश के नेताओं और स्वयं महात्माजी तक को वहां बुलाने में वे सङ्कोच करते थे। महात्माजी ने उन्हें लिख दिया था कि जब कभी मेरी ज़रूरत हो, तभी आप मुझे बुलालें। बम्बई में श्रीराजगोपालाचार्य और श्रीगंगाधर-राव देशपांडे ने कहा कि हम बारडोली देखेंगे। परन्तु सरदार ने अत्यन्त विनय और दुःख के साथ उन्हें बारडोली लेजाने से इन्कार कर दिया।

आर्थिक सहायता

जब पठानों का नादिरशाही ज़ुल्म दिन पर दिन बढ़ने लगा तब सरदार ने ८ मई सन् १९२८ को देश से आर्थिक सहायता की अपील की। महात्माजी ने भी अपनी आवाज़ लगाई। फिर क्या था, देश भर में बारडोली के लिए रुपया जमा होने लगा और चारों ओर से धन-राशि सरदार के

पास भेजी जाने लगी। फ्रांस, बेलजियम, चान, जापान, न्यूज़ीलेंड आदि सुदूरस्थ प्रदेशों तक से सरदार के पास रुपया आया और चारों ओर से सहानुभूति के सन्देशों का तांता बंध गया।

बाहर से सत्याग्रह आन्दोलन में काम करने के लिए लोगों के पत्र आने लगे। सरदार वल्लभभाई ने सब को धन्यवाद देकर लिख दिया—"अभी इन बातों की कोई ज़रूरत नहीं है। केवल आर्थिक सहायता से काम चल जायगा। स्वयं-सेवक अभी यहां काफ़ी हैं। सरकार की जेलें भरने के लिए हम उसे काफ़ी आदमी दे सकते हैं।"

नेताओं का आगमन

नेता लोग बारडोली जाने से अधिक समय तक न रुक सके। सब से पहले बम्बई के देशभक्त मि० बरजोरजी, फराम-जी भरूचा और श्रीनरीमेन बारडोली आये। वहाँ के किसानों का सुदृढ़ सङ्गठन और अद्भुत आत्मत्याग देखकर वे दङ्ग रह गये। सरदार की कार्य्य-पटुता और अनुशासन देखकर वे उनकी भूार भूरि प्रशंसा करने लगे। मि० भरूचा ने किसानों से कहा—"इंग्लैंड के लोग अब इस बात पर विचार कर रहे हैं कि यदि इस तरह की सत्याग्रह की लड़ाइयां होने लगेंगी तो हम इन तोप, बन्दूकों और हवाई जहाज़ों का क्या करेंगे?"

श्रीनरीमैन ने किसानों की एक विराट सभा में कहा—"बार-डोली का सारा ताल्लुक़ा जेल बन गया है। बेचारे किसान दिन दिन भर अपने जानवरों सहित घरों में बन्द रहते हैं। लोग कहते हैं कि चोर, लुटेरों और ठगों को निकाल कर आजकल अँगरेज़ यहाँ राज कर रहे हैं। परन्तु मैं तो कहूंगा कि और कहीं चाहे जो हो, बारडोली में तो आज लुटेरों, पठानों और बम्बई के गुन्डों का ही राज्य है। आजकल इस ताल्लुके में लाठी बाँधकर घूमनेवाले पठान, बम्बई के वे ही पठान हैं जिनके पीछे रातदिन पुलिस घूमा करती है और जो वहां लोगों के गले काटते फिरते हैं। अब ये बदमाश, किसान बहिनों को भी छेड़ने लगे हैं! मैं कहता हूं कि सरकार के लिए इससे अधिक शर्म की बात और कोई नहीं हो सकती।"

लुटेरों का राज्य

२७ मई को सूरत में ज़िला कान्फ्रेंस का एक विराट अधिवेशन हुआ। सभापति श्री जयरामदास ने अपने ज़ोरदार भाषण में कहा—"आज जिस बारडोली की सारा देश पूजा कर रहा है, जहां वीरता और आत्मत्याग के पाठ पढ़ाये जा रहे हैं, उस ताल्लुक़े के सम्बन्ध में होने वाली कान्फ्रेंस का सभापति होना कैसा? इस समय तो वहां जाकर उस युद्ध में सम्मिलित हो जाना ही धर्म है।" इसके वाद कर-तल-ध्वनि के

बीच सरदार वल्लभभाई बोले—"दो और दो चार कहने के बदले, दो और दो चौदह कहने वाले अधिकारी चाहे कितना ही दबावें, डर दिखावें, ज़मीन छीनें, और इस प्रकार की निरंकुशता से किसान दर दर के भिखारी बन जायँ, फिर भी वे अपनी टेक न छोड़ेंगे। बारडोली में आज आबरूदार सरकार का नहीं, गुण्डों, चोरों और लुटेरों का राज्य है।" सरदार के इन शब्दों में कितनी सचाई है, कितनी निर्भीकता है, कितना तेज है, यह कहने की तनिक भी आवश्यकता नहीं। उस दिन के भाषण के एक एक शब्द से चिनगारी निकलती थी। सरदार का एक एक शब्द किसानों की नस नस में बिजली दौड़ाने वाला था। उसमें उनके हृदय की वह कसक थी, जिससे प्रेरित होकर आज वे सरकार के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा खड़ा करने को विवश हुए थे।

इन सब बातों से स्पष्ट है कि बारडोली में उन दिनों 'नादिरशाही' का बोलबाला था। उस 'नादिरशाही' के मुक़ाबले, सरदार वल्लभभाई अपने सत्याग्रही सैनिकों और निहत्थी शांत जनता के साथ जिस प्रकार अद्भुत वीरता के साथ मैदान में सीना खोले अड़े हुए थे, उसकी मिसाल क्या संसार के इतिहास में कहीं भी मिल सकती है?

समझौते की बातें

मेरे लिए एक अपमान-जनक समझौते की अपेक्षा उस पराजय का मूल्य कहीं अधिक है जिसमें आत्म-सम्मान को ज़रा भी ठेस न लगे।

वल्लभभाई

सरकार के दमन का ज़ोर हद तक पहुँच गया। बारडोली के किसानों को कुचल डालने और आन्दोलनकारियों को दबा देने की उसने भरसक चेष्टा की, पर मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की! आन्दोलन की आग बलिदानों की आहुतियों से अधिकाधिक प्रज्जवलित होती गई। यह देख कर सत्ताधारियों के आसन हिल उठे। कुछ लोगों ने अधिकारियों को समझाना आरम्भ किया और सरदार से लिखा-पढ़ी करके समझौता कराने का पूरा उद्योग किया। श्री-हरिलाल देसाई ने एक पत्र लिखकर सरदार के आगे समझौते की कुछ शर्तें रखीं। उत्तर में सरदार ने तार देकर स्पष्ट कह दिया—

"बढ़ाया हुआ लगान जांच के पहले देना असम्भव है

यदि स्वतंत्र जांच की माँग स्वीकार हो, उसमें सबूत पेश करने, सरकारी गवाहों से जिरह करने, कुर्क की हुई ज़मीनें वापस करने, और सत्याग्रही कैदियों को छोड़ने की शर्त्त मंज़ूर हो, तो पुराना लगान दिया जा सकता है। लोग निष्पक्ष जांच का फैसला ही स्वीकार करेंगे।"

बारडोली के सत्याग्रह-आन्दोलन का प्रभाव देश के कोने कोने पर पड़ रहा था। चारों ओर से आर्थिक सहायता पहुँचाई जा रही थी। सरदार वल्लभभाई के बड़े भाई एसेम्बली के प्रेसिडेंट श्री विट्ठलभाई पटेल अपने वेतन में से एक हज़ार रुपये मासिक दे रहे थे। इधर बम्बई प्रान्तीय कौंसिल के श्रीकन्हैयालाल मुंशी, श्रीजयरामदास दौलतराम आदि १६ मेम्बरों ने अपनी जगहों से इस्तीफ़ा दे दिया। वे अपनी जगहों से बारडोली के प्रश्न को लेकर फिर कौंसिल के लिए खड़े हुए और फिर चुन लिये गये। श्रीमुंशी स्वयं बारडोली पहुँचे और वहां की विकट परिस्थिति का दिग्दर्शन कराते हुए उन्होंने बम्बई के गवर्नर को कई ज़ोरदार पत्र लिखे।

निष्पक्ष जाँच

जब गवर्नर बारडोली के किसानों की स्थिति की निष्पक्ष जाँच कराने पर राज़ी नहीं हुआ तब अन्त में मि मुंशी ने

६

लिखा—"यदि सरकार ने अपनी नीति नहीं बदली तो या तो बारडोली के किसानों के हाथ से ज़मीन चली जायगी, या बारडोली में ख़ून-ख़राबी होकर रहेगी!"

२७ जून सन् १६२८ को सेठ जमनालाल बजाज के साथ भारत-सेवक-समिति की ओर से पं० हृदयनाथ कुंजरू, श्री-वझे तथा श्रीअमृतलाल ठक्कर बारडोली का निरीक्षण करने आये। वे ताल्लुक़े भर में घूमे, और किसानों की वर्तमान स्थिति का अच्छी तरह अध्ययन किया। इसके बाद तुरन्त ही उन्होंने अपनी एक रिपोर्ट प्रकाशित कर दी। रिपोर्ट में कहा गया—"न्याय को देखते हुए बारडोली के इस लगान-वृद्धि के मामले की फिर से जांच होने की बड़ी ज़रूरत है। फिर जब सरकार बीरम गाम ताल्लुका की जमाबन्दी पर फिर से विचार करने का निश्चय कर चुकी है, तब तो बारडोली के किसानों की मांग को स्वीकार करने के लिए उसके पास कोई कारण ही नहीं है।"

इस रिपोर्ट से नरम दल वालों के भी कान खड़े हुए। उनकी नींद भङ्ग हुई। डा० सप्रू, मि० चिन्तामणि आदि सभी नरम नेता सरकारी दमन-नीति की निन्दा करने लगे। इस प्रकार प्रायः सभी विचारशील आदमियों ने बारडोली के सत्याग्रही किसानों के साथ सहानुभूति दिखाई।

किसानों की सरकार

जुलाई के आरम्भ में भड़ोंच ज़िला-कान्फ्रेंस हुई। उसके स्वागताध्यक्ष थे श्रीकन्हैयालाल मुंशी और सभापति श्री-खुरशेदजी नरीमेन। सभापति ने अपने ज़ोरदार भाषण में सरकारी लगान-नीति और किसानों पर ढाये गये ज़ुल्मों की बड़ी निन्दा की। अन्त में उन्होंने कहा—"दस बीस वर्ष पहले का किसान अब नहीं रहा। बारडोली में अंगरेज़ों को पूछता कौन है? उनकी अदालतों में कौन जाता है? उनके अधि-कारी ज़ोर-ज़ुल्म से किसी को ज़बर्दस्ती घसीट कर ले जायँ तो बात दूसरी है, नहीं तो, कौए उड़ते हैं! लोगों की सच्ची अदालतें तो स्वराज्य-आश्रम है और उनकी सरकार है सर-दार वल्लभभाई! परन्तु वल्लभभाई के पास कोई तोप-बन्दूकें थोड़े ही हैं। वे तो केवल प्रेम और सत्य के बल पर बारडोली में राज कर रहे हैं।" इस प्रकार बारडोली में चारों ओर 'किसानों की सरकार' के रूप में सरदार वल्लभभाई का बोल-बाला हो रहा था।

बरसात के दिन

सरकार ने कुछ सोच-समझ कर बारडोली से जंगली पठानों की सत्ता हटा ली। पठानों की जगह हथियारबन्द पुलिस आगई। इधर वर्षा शुरू हुई। किसानों ने महीनों से

छोड़े हुए अपने हल-बैल संभाले। वे निर्भयता से अपने खेतों को जोतने और बोने लगे। जिन लोगों की ज़मीनें नीलाम कर ली गई थीं, उन्होंने भी समय पर उनमें हल चलाया। कुमारी मणि बहिन पटेल और मीठू बहिन पेटिट ने उन खेतों पर रहने के लिए झोंपड़ियां बना लीं जो लगान न देने के कारण बिक चुके थे।

सरदार की घोषणा

इन्हीं दिनों ताड़ और खजूर के पेड़ों के ठेके की मियाद ख़त्म हुई। पिछले दिनों आबकारी के महकमे ने ज़ब्ती के अफ़-सरों को, पारसी ठेकेदारों पर अन्याय करने में सहायता दी थी। सरदार वल्लभभाई ने अपनी एक ज़ोरदार घोषणा प्रकाशित करके किसानों से अपील की कि वे आबकारी के महकमे से सहयोग न करें। घोषणा में कहा गया—"इस महीने के अन्त में ताड़ के पेड़ों और ताड़ी की दुकानों का नीलाम होने वाला है। लगान-वृद्धि के विरोध में हमने जो सत्याग्रह कर रखा है, उसे दबाने के काम में आबकारी के महकमे ने जिस अनीति से काम लिया उसे देखते हुए अब इस महकमे से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखना कितना ख़तरनाक है, यह किसी से छिपा नहीं है। इसलिए मेरी सलाह तो यह है कि इस दशा में कोई आदमी इन नीलामों

में भाग न ले। किसानों को मेरी सलाह है कि वे इस वर्ष अपने खजूर के पेड़ किसी को न दें।" इस घोषणा पर किसानों ने अच्छी तरह अमल किया और ताड़-खजूर के पेड़ों के नीलामों के मामले में आबकारी के महकमे का बहिष्कार कर दिया गया।

बारडोली के सत्याग्रह-आन्दोलन की आग देश भर में पहुँच चुकी थी। देश की आंखें उधर ही लग रही थीं। जुलाई बीतने से पहले एसेम्बली के सदस्य श्रीनृसिंह चिन्तामणि केलकर, जमनादास मेहता और बेलवी ने एक विज्ञप्ति निकाल कर भारत-सरकार से प्रार्थना की कि बारडोली का आन्दोलन अब अखिल भारतीय प्रश्न बन गया है, इसलिए वह इस मामले को तुरन्त अपने हाथ में ले। इस विज्ञप्ति के प्रकाशित होने से पहले ही बम्बई के गवर्नर सर लेस्ली विलसन को वायसराय ने शिमला बुला लिया। धीरे धीरे सरकार की नींद उचट रही थी। आन्दोलन को दबाने की उसकी सारी चेष्टाएं विफल हुईं, इसलिए वह बहुत परेशान हो रही थी।

विजय

सरकार समझौते के लिए उत्सुक होरही थी। सरदार वल्लभभाई को गवर्नर से मिलने के लिए सरकार का निमंत्रण मिला। सरदार अपने वयोवृद्ध साथी अब्बासतैयबजी, तथा श्रीमती मीठू बहिन पेटिट, श्रीमती शारदा बहिन आदि के साथ गवर्नर से मिलने के लिए सूरत गये। सरदार और गवर्नर में बड़ी देर तक ख़ूब खुल कर बातें होती रहीं। परन्तु उस बातचीत का कोई नतीजा नहीं निकला। गवर्नर चाहते थे कि जनता पहले लगान अदा कर दे। पर सरदार भला यह बात कैसे मान लेते? दोनों ने अपनी अपनी शर्तें एक दूसरे के सामने रक्खीं, परन्तु दोनों में से एक भी दूसरी ओर की शर्त्तें मानने को राज़ी नहीं हुआ। इस प्रकार सूरत में समझौते का उद्योग बिलकुल असफल रहा। इससे देश भर में उत्तेजना फैल गई। लोग सरकार की अदूरदर्शी नीति की निन्दा करने लगे।

तानाशाही अकड़

२३ जुलाई सन् १६२८ को कौंसिल में बम्बई के गवर्नर का बड़ा बेढंगा भाषण हुआ। उसने आन्दोलन की आग में घी का काम देकर उसे और भी भड़काया। भाषण में वही राग अलापा गया—सरकार इस मामले की निष्पक्ष और स्वतंत्र जांच करने के लिए तैयार है, अगर लोग नया लगान पहले जमा करा दें और यह आन्दोलन बन्द कर दिया जाय। बड़ी अकड़ के साथ यह भी कहा गया कि यदि एक वाक्य में कहें तो प्रश्न यह दिखाई देता है कि साम्राज्य के एक भाग में सम्राट का क़ानून माना जाय या कुछ ग़ैर सरकारी लोगों की आज्ञायें मानी जायँ? यह बात तो ऐसी है कि इसका मुक़ाबला करने के लिए सरकार अपनी सारी ताक़त लगा देना चाहती है!

गवर्नर की धमकी में बिल्कुल तानाशाही अकड़ थी। इस धमकी से सरदार वल्लभभाई और उनके सत्याग्रही योद्धा डर कर अपना काम बन्द कर देने वाले जीव नहीं थे। देश भर में गवर्नर के भाषण से बड़ी भारी सनसनी फैल गई। सरदार ने एक वक्तव्य निकाल कर गवर्नर के भाषण में कही गई कुछ उन बातों का खण्डन कर दिया जिनसे जनता में भ्रम फैलने की सम्भावना थी। सरदार ने

स्पष्ट शब्दों में कहा—"मुझे कभी कल्पना तक नहीं थी कि गवर्नर साहब ऐसा रौब गांठने वाला भाषण देंगे।……… मैं आशा करता हूं कि कोई गवर्नर साहब के शब्दाडम्बर के चक्कर में न पड़ेगा।"

बम्बई के गवर्नर की अकड़ का समर्थन करते हुए हाउस आफ़ कामन्स में अर्लविण्टर्टन ने कहा—"बम्बई की कौंसिल में सर लैस्ली विल्सन ने बारडोली के सम्बन्ध में जो शर्त्तें पेश की हैं, वे, यदि पूरी न की गईं तो बम्बई-सरकार को पूरा अधिकार है कि वह आन्दोलन को कुचल दे और जनता को क़ानून का आदर करने पर विवश करे।" इस प्रकार की तानाशाही बातें करते हुए सरकार को तनिक भी शर्म नहीं आई! एक ओर तो वह इस तरह की गीदड़-भभकियां दे रही थी, और दूसरी ओर समझौते के लिए उत्सुक थी। इस प्रकार की कूटनीति-भरी चालें चलने में सरकार सचमुच बड़ी पटु है। सरदार वल्लभभाई इस बात को अच्छी तरह जानते थे, इसीलिए उन्होंने जनता को सावधान रहने की चेतावनी दी थी।

सरकार की तानाशाही अकड़ और धमकी का सत्याग्रह-आन्दोलन पर कोई असर न पड़ा। यहां तो देश भर में उत्साह की उमङ्गें उमड़ रही थीं। जगह जगह लोग बारडोली की विजय के स्वप्न देख रहे थे। बम्बई-कौंसिल के मेम्बर

श्रीमुंशी आदि भाग-दौड़ कर समझौता कराने के उद्योग में बराबर लग रहे थे। इसी बीच में बम्बई-कौंसिल के एक उदारमना सदस्य श्रीरामचन्द्र भट्ट ने किसानों के लिए ताल्लुके के बढ़े हुए लगान की रक़म सरकारी ख़ज़ाने में दाख़िल करा देने की इच्छा प्रकट की। गवर्नर ने उसे स्वीकार कर लिया। इसके बाद रामचन्द्र भट्ट ने बढ़ाये हुए लगान की रक़म सरकारी ख़ज़ाने में जमा करा दी। समझौते के मार्ग में यही सबसे बड़ी रुकावट थी, वह इस तरह दूर हो गई।

सूरत के कौंसिल के कई सदस्यों ने दौड़-धूप कर प्रतिनिधियों और गवर्नर के बीच समझौता करा दिया। सरदार वल्लभभाई को भी पूना और अहमदाबाद तक काफ़ी दौड़-धूप करनी पड़ी। महात्मा गांधी भी समझौते की शर्त्तों को स्वीकार कर चुके थे। दोनों पक्षों के एक दूसरे की शर्त्तों को मान लेने पर ६ अगस्त सन् २८ को बारडोली और सूरत के प्रतिनिधियों ने रेवेन्यू मेम्बर को एक पत्र भेजकर कहा—"आपके तारीख़ ३ अगस्त के पत्र के उत्तर में, यह कहते हुए हमें हर्ष होता है कि २३ जुलाई को गवर्नर ने अपने भाषण में जो शर्त्तें रखी थीं, वे पूरी हो जायंगी, यह कहने योग्य परिस्थिति में हम पहुंच गये हैं और इस बात की सूचना हम दे सकते हैं।"

इसके बाद सरकार की ओर से नये बन्दोबस्त की फिर से जांच किये जाने की घोषणा कर दी गई। सरकारी घोषणा में यह भी कह दिया गया कि सरकार सभी ज़मीनें लौटा देगी, क़ैदियों को छोड़ देगी। तलाटियों को पुरानी जगहों पर बहाल कर दिया जायगा।

सरदार वल्लभभाई ने एक वक्तव्य निकाल कर समझौते पर अपना सन्तोष प्रकट किया और जिन लोगों ने समझौता कराने का सराहनीय उद्योग किया था उन्हें और साथ ही सरकार को भी धन्यवाद दिया।

सरदार का वक्तव्य

समझौते पर सरदार ने इस आशय का एक वक्तव्य निकाला—

"ईश्वर की कृपा से, जो हमने प्रतिज्ञा की थी उसका पूर्ण रूप से पालन हो गया। बढ़ाये हुए लगान के सम्बन्ध में हम जैसी जांच चाहते थे, सरकार ने वैसी ही जांच-समिति को नियुक्त करना स्वीकार कर लिया है। कुर्क की हुई ज़मीनें किसानों को वापस मिलेंगी। जेल में भेजे गये सत्याग्रही छोड़ दिये जायंगे। पटेल और तलाटियों को फिर उनकी जगह पर बहाल कर दिया जायगा। इनके सिवा और भी छोटी मोटी जो माँगें हमने पेश की थीं, वे स्वीकार कर ली गई हैं। इस

प्रकार हमारा प्रण पूरा करने के लिए, हमें परमेश्वर का उपकार मानना चाहिए।"

इस प्रकार देश के लिए गौरव-पूर्ण शर्त्तों के साथ बारडोली के सत्याग्रह-संग्राम का अन्त हुआ। इस सम्मान-पूर्ण समझौते में सरदार वल्लभभाई पूर्ण रूप से विजयी हुए, इसमें कोई सन्देह नहीं। जिन अधिकारियों ने अपनी तानाशाही अकड़ में आसमान सर पर उठा रखा था, अन्त में उन्हें बारडोली के निहत्थे किसानों के सामने घुटने टेक देने पड़े। सरकार को उस निरंकुश त्रासमय वातावरण का बारडोली के ताल्लुके से अन्त कर देना पड़ा, जिसमें हज़ारों निरपराध किसान दमन-चक्र में पीसे जा रहे थे। इस विजय का सारा श्रेय सरदार वल्लभभाई को प्राप्त है। भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के इतिहास में सरदार की यह विजय सचमुच अनूठी है।

श्रीमहादेव भाई देसाई ने 'यङ्ग इण्डिया' में लिखा था—

"बारडोली का समझौता सत्य और अहिंसा की विजय है। यह सरदार की तीसरी विजय और स्वराज्य के मार्ग में उनके द्वारा तय की हुई यह तीसरी मंज़िल है।......बारडोली को विजय की विलक्षणता इस बात में है कि उसने उस सरकार को १४ दिन के भीतर ही झुका दिया जिसने उसे बिलकुल बर्बाद कर देने की प्रतिज्ञा की थी!"

सुलह के दिन तक बारडोली के सत्याग्रह के लिए देश भर से ३, ६३, ५०० रुपये की रक़म मिली। इस रुपये से संग्राम का काम सुचारु रूप से चलाया गया। बारडोली में किसी बात की कमी न रही। इस विजय से सरदार वल्लभ-भाई ने भारतीय जनता का हृदय जीत लिया। देश के उच्च-कोटि के लोक-सेवियों में उनका आसन बहुत ऊंचा होगया।

विजय के दिन

बारडोली की विजय से देश भर में आनन्द की लहर सी उमड़ उठी। गुजरात में तो घर घर विजयोत्सव मनाये गये। ११-१२ अगस्त को जगह जगह बड़ी धूम-धाम से विजयोत्सव मनाये गये। ११ अगस्त को ताल्लुके भर में उत्सवों की धूम रही। उसके दूसरे दिन बारडोली के स्वराज्य आश्रम में विजयोत्सव मनाया गया। उत्सव के समय महात्मा गांधी और सरदार वल्लभभाई जेल से छूटे हुए कुछ सत्याग्रहियों के साथ स्वराज्य-आश्रम पहुँचे। उस समय सैकड़ों स्त्री-पुरुष वहां इकट्ठे थे। सबके चेहरों पर उत्साह और हर्ष की एक अपूर्व झलक थी। दोनों नेता प्रभावशाली भाषणों में जनता का ध्यान रचनात्मक काम की ओर आकर्षित कर के, बाजीपुरा और वालोड के लिए रवना हो गये। वहां पहुँचने पर इन दोनों नेताओं का ३ हज़ार से अधिक लोगों ने स्वागत किया।

शुद्ध विजय

बारडोली की विजय पर अपने पवित्र उद्गारों में महात्माजी ने कहा—"इस मामले में तो कोई ऐसी बात ही नहीं हुई है जिससे आपके या आपके सरदार के आत्मसम्मान में ठेस लगी हो। शर्त्त का पालन कराने वाला तो ईश्वर था। अनेक उद्धत भाषणों के बाद सरकार को हमारी शर्तें मानने को विवश होना पड़ा। इसमें हमारे स्वाभिमान या प्रतिष्ठा को तनिक भी क्षति नहीं पहुँची। सत्याग्रह के शास्त्री की हैसियत से मैं कहता हूं कि मुझे सत्याग्रह की अनेक लड़ाइयों का अनुभव है, परन्तु उनमें से एक में भी इससे अधिक सच्ची और शुद्ध विजय नहीं मिली।"

अधूरी प्रतिज्ञा

इसके बाद सरदार वल्लभभाई ने अपने प्रभावशाली भाषण में कहा कि स्वराज्य लेने की जो प्रतिज्ञा सन् १९२१ में की थी, वह तो अभी अधूरी ही पड़ी है। अब हमें उसे पूरा करने में लग जाना चाहिए।

बारडोली में

बारडोली के स्वराज्य-आश्रम पर १० हज़ार स्त्री-पुरुषों की भीड़ जमा थी। लोग महात्मा गांधी और उनके परम शिष्य

सरदार वल्लभभाई की ओर टकटकी लगाये खड़े थे। श्री-महादेवभाई देसाई के मङ्गल-गान के बाद महात्मा गांधी ने एक लम्बा भाषण दिया। वे कहने लगे—"मैं तो दूर बैठ कर आपकी विजय की कामना किया करता था। यह भी सच है कि मैं आपके बीच आकर काम करने वाला नहीं हूं। मैं वल्लभभाई के वश में था, जब वे चाहते तभी मुझे यहां बुला सकते थे, पर आपकी इस विजय के श्रेय को तो मैं नहीं ले सकता। यह विजय तो आपकी और आपके सरदार की है।"

महात्मा गांधी का भाषण समाप्त होने पर सरदार वल्लभ-भाई ने कहा—"सरकार के साथ लड़ने में मज़ा ज़रूर आता है, परन्तु मुझे तो आपसे भी लड़ना पड़ेगा। किसान अपनी ही ग़लतियों के कारण कष्ट भोग रहे हैं। मैं उन ग़लतियों को सुधारना चाहता हूँ।........

जब तक आप चाहें तब तक मैं आपके साथ रहने के लिए तैयार हूं। गांव गांव घूम कर मैं आपको समझाऊँगा। बहिनों और बच्चों से मिलूँगा। पञ्चों को इकट्ठा करके समझाऊंगा कि मोक्ष की कुञ्जी तो हमारे ही हाथ में है। उसके लिए कहीं तोप-बन्दूकों के सामने जूझने की ज़रूरत नहीं है। थोड़ा संयम सीख लेने की ज़रूरत है, कुछ पाप धो डालने हैं, कुछ झूठा अभिमान छोड़ देना है। एक बार जिसने

ताप के सामने जाने की तैयारी कर ली है, उसके लिए यह सब कुछ भी कठिन नहीं है। इसलिए मुझे आशा है कि जिस प्रकार इस लड़ाई में आप सबने मेरा साथ दिया, उसी प्रकार अब आगे जो काम होने वाला है, उसमें भी मेरा साथ देंगे। ईश्वर आपको ऐसी बुद्धि और शक्ति प्रदान करें। परमेश्वर आपका कल्याण करें।"

सरदार वल्लभभाई ने अपना भाषण समाप्त कर दिया। लोगों के चेहरों पर एक अपूर्व गम्भीरता का भाव झलक रहा था। उसी समय कुछ देवियों ने सुमधुर स्वरों में गाना आरम्भ किया—

सुनेरी मैंने निर्बल के बल राम,
पिछली साख भरूं सन्तन की
आय सँवारे काम। सुनेरी मैंने॥

गायन के बाद सभा समाप्त हुई। महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई तथा अन्य नेता और बहुत से स्वयंसेवक सूरत के लिए रवाना होगये। सूरत, अहमदाबाद आदि नगरों में महात्मा गांधी, और सरदार वल्लभभाई पटेल का जो शानदार स्वागत हुआ वह देखते ही बनता था। इन स्थानों की जनता ने बारडाली की विजय के उपलक्ष में सरदार वल्लभभाई को मानपत्र दिये। सरदार ने महात्मा गांधी के साथ

घूमकर अपने भाषणों में लोगों को सत्याग्रह की महत्ता बतलाई और उनसे स्वराज्य के लिए आगे चलकर लड़ी जाने वाली लड़ाई के लिए तैयार होने का अनुरोध किया।

जेल में

बारडोली का सत्याग्रह-संग्राम विजय कर लेने के कारण सरदार वल्लभभाई केवल इस देश के लोगों के ही नहीं, बल्कि संसार के श्रेष्ठतम व्यक्तियों के श्रद्धा और आदर के पात्र बन गये। इस लड़ाई की महत्त्वपूर्ण कहानी के साथ सरदार वल्लभभाई के जीवन का अटूट सम्बन्ध है। जब जब सरदार की जीवन-गाथा की चर्चा होगी, तब तब बारडोली का नाम बड़े गौरव के साथ याद किया जायगा। इसीलिए यथाशक्ति संक्षिप्त रूप में हमने उस युग-प्रवर्त्तक कहानी का उल्लेख कर दिया है।

बारडोली की विजय के बाद सरदार ने अपने रचनात्मक कार्य्य में तनिक भी शिथिलता न आने दी। उन्होंने जनता को बार बार सावधान कर दिया कि केवल इसी विजय पर फूल उठने की ज़रूरत नहीं है। अभी आज़ादी की लड़ाई लड़नी है। उसके लिए तैयारी करो।

पूर्ण स्वतंत्रता

लाहौर-कांग्रेस के बाद देश में पूर्ण स्वतंत्रता का आन्दोलन बढ़ने लगा। युवक-दल तो बहुत पहले ही से इधर अग्रसर हो रहा था। राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू और श्रीसुभाष-चन्द्र बोस बहुत पहले से युवकों के द्वारा देश को समझाते आ रहे थे कि ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर स्वराज्य का स्वप्न देखना केवल ढकोसला है। सरकार से निराश होकर, लाहौर कांग्रेस से तो महात्मा गांधी और पंडित मोतीलाल नेहरू ने भी पूर्ण स्वतंत्रता की आवाज़ बुलन्द की। महात्मा गांधी ने सरकार को चेतावनी दी कि यदि सरकार देश की मांगें पूरी न करेगी तो सत्याग्रह-आन्दोलन का सूत्रपात होगा।

नमक-सत्याग्रह

सरकार के ऊपर महात्माजी की चेतावनी का कोई असर नहीं पड़ा। वह सदा की तरह इस बार भी चुपचाप कान में तेल डाले बैठी रही। महात्मा गांधी ने नमक-सत्याग्रह की तैयारी आरम्भ कर दी। १२ मार्च सन् १९३० को १०० स्वयंसेवकों के साथ महात्मा गांधी साबरमती-आश्रम से डाँडी में नमक-क़ानून तोड़ने के लिए रवाना होने वाले थे। सरदार वल्लभभाई अपने उसी पवित्र क्षेत्र बारडोली के मैदान में डटे हुए अपना काम कर रहे थे।

७ मार्च सन् १९३० को सरदार वल्लभभाई बोरसद ताल्लुक़े के रास गाँव में एक भाषण देने गये। वहां पहुंचने पर ज़िला मजिस्ट्रेट का उन्हें एक आर्डर मिला। इसमें भाषण देने की मनाही की गई थी। सरदार ने मजिस्ट्रेट की आज्ञाभङ्ग कर भाषण दिया, इसलिए वे गिरफ़्तार कर लिये गये। इसी अपराध में सरदार को ३ महीने की क़ैद और ५०० रुपये जुर्माने की सज़ा दे दी गई। जुर्माना न देने के कारण उन्हें ३ सप्ताह तक और जेल में रहना पड़ा। वे साबरमती-जेल में रक्खे गये।

जेल के बाहर

जेल में सरदार वल्लभभाई को बड़ा कष्ट सहना पड़ा। कहते हैं कि उन्हें वहाँ पाँच पैसे रोज़ की ख़ुराक पर रहना पड़ता था! जेल की अवधि पूरी होने पर सरदार वल्लभभाई २६ जून को छोड़ दिये गये। जेल में उनका वज़न १५ पौंड कम होगया।

जेल से छूटने पर देश में सरदार वल्लभभाई का बड़ी धूम-धाम से स्वागत हुआ। बाहर आकर तो उन्होंने देश को सत्याग्रह-आन्दोलन में व्यस्त देखा। महात्मा गांधी, राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू तथा अगणित सत्याग्रही स्वयंसेवक जेल में बन्द किये जा चुके थे। इस आन्दोलन की आग की

लपटें दूर दूर तक फैल चुकी थीं। यह दशा देख कर सरदार का हृदय बल्लियों उछलने लगा। एक योद्धा को और क्या चाहिए? चारों ओर घात-प्रतिघात की जलती हुई आग की लपटों में घुस कर अपने कठोर कर्तव्य का पालन करना ही एक योद्धा के जीवन का उच्चतम उद्देश है। सरदार बड़ी तत्परता से लड़ाई में जुट गये। महात्मा गांधी ऐसे रण-कुशल सेनापति की अनुपस्थिति में उनका जेल से बाहर आजाना देश के लिए सौभाग्य की बात थी।

इधर सरकार ने कांग्रेस की कार्य्यकारिणी सामति को ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दिया और राष्ट्रपति पण्डित मोतीलाल नेहरू, डाक्टर महमूद आदि नेताओं को गिरफ़्तार करके जेल में बन्द कर दिया। जेल-यात्रा करते समय पण्डित मोतीलालजी ने राष्ट्रपति के आसन पर सरदार वल्लभभाई पटेल को बैठा दिया। इस सर्वोच्च आसन पर बैठकर तो सरदार ने दूने उत्साह से राष्ट्रीय युद्ध का सञ्चालन किया।

धरासना और वडाला के मोर्चों पर सत्याग्रही स्वयंसेवकों ने जिस वीरता और साहस के साथ लड़ाई लड़ी, वह घटना भारत के इतिहास में सचमुच बड़ा महत्त्व-पूर्ण स्थान प्राप्त करेगी। सैकड़ों स्वयंसेवकों और देवियों ने पुलिस की लाठियों की मार अपने सीने खोलकर सहन की। उस वीरता को देख कर सत्ताधारियों की क्रूरता और पशुता भी ठिठक कर रह गई।

तिलक-दिवस

वडाला और धरासना की लड़ाई के बाद, सार्वजनिक जीवन में, बम्बई के सैनिकों ने भी सरकार के साथ बड़ी क़रारी मुठभेड़ें कीं। पुलिस के अधिकारियों की आज्ञा भङ्ग करके नित्य नये जुलूस निकाले गये। बम्बई के स्त्री-पुरुष और बच्चों ने जुलूसों में बड़ी वीरता से भाग लिया। इन जुलूसों में प्रायः लोगों को पुलिस की मार सहनी पड़ी। पुलिस की मार से कितनों के सर फूटे, कितनों की हड्डियाँ टूटीं और कितने सैनिक घायल हुए, उसका अन्दाज़ आज नहीं लगाया जा सकता।

गत पहली अगस्त को बम्बई भर में बड़े समारोह से तिलक-दिवस मनाया गया। जिस महापुरुष ने, लोकमान्य तिलक के रूप में, नौकरशाही से आजन्म लोहा लेकर, इस ग़ुलाम देश को स्वराज्य का मंत्र सिखाया था, उसे यह देश क्या कभी भूल सकता है? उन्हीं लोकमान्य की स्मृति में बम्बई में एक विराट सार्वजनिक जुलूस निकाला गया। जुलूस में २०-२५ हज़ार आदमी थे। जुलूस के आगे राष्ट्र-पति की हैसियत से सरदार वल्लभभाई पटेल थे और पण्डित मदनमोहन मालवीय तथा अन्य नेता भी उनके साथ थे। वे जुलूस का सञ्चालन कर रहे थे। हार्नबी रोड पर अधिकारियों

ने जुलूस को आगे बढ़ने से रोक दिया। सरदार वल्लभभाई और महामना मालवीयजी ने पुलिस-अफ़सरों की इस धांधली का घोर प्रतिवाद किया। परन्तु उनके कान पर जूं तक न रेंगी और उन्होंने जुलूस को आगे नहीं बढ़ने दिया।

गिरफ़्तारी

सरदार वल्लभभाई ने सब लोगों से अपील की कि वे शान्त रहकर मैदान में डटे हुए बराबर खड़े रहें। इसी प्रकार सार्वजनिक सङ्घर्षण से भारत की आज़ादी की लड़ाई जीती जायगी। लोगों में अपूर्व उत्साह था। सरदार की दृढ़ता और अद्भुत साहस ने उनकी नस नस में बिजली दौड़ा दी। वह दृश्य सचमुच अनोखा था। एक ओर हथियारबन्द सिपाही लिये पुलिस के अधिकारी खड़े थे, दूसरी ओर थे निहत्थे सरदार, महामना मालवीयजी और उनके पीछे २५ हज़ार आदमियों की शान्त और सुसङ्गठित भीड़! रात भर हौर्नबी रोड पर इसी तरह की क़रारी कशमकश रही। उस दिन दुनिया देख रही थी कि पराधीन भारत के कर्मण्य लोगों ने जीवन-संग्राम में आगे बढ़ने की भीष्म-प्रतिज्ञा करली है, उनके मार्ग को विदेशी सरकार की पुलिस तो क्या, संसार की बड़ी से बड़ी शक्ति भी नहीं रोक सकती!

शाम के ४ बजे से दूसरे दिन सवेरे ८ बजे तक जुलूस बराबर सड़क पर रुका खड़ा रहा। लोग आरम्भ से अन्त तक बराबर शान्त रहे। अनेक महिलाओं की अद्भुत वीरता उस दिन देखते ही बनती थी। अन्त में अधिकारियों ने धीरज खो दिया। उन्होंने जुलूस के सञ्चालक सरदार वल्लभ भाई, महामना पण्डित मदनमोहन-मालवीय, डाक्टर हार्डीकर, और मि० तसद्दुक अहमदख़ां शेरवानी को गिरफ़्तार कर लिया। उधर नेता गिरफ़्तार कर जेल में पहुंचाये गये, इधर जुलूस की भीड़ पर पुलिस की लाठियां पड़ीं! पुलिस ने मार-मार कर लाठियों के ज़ोर से भीड़ को तितर-बितर कर दिया! इस प्रकार बम्बई के वीर स्त्री-पुरुषों ने तिलक-दिवस के उपलक्ष में पुलिस के नादिरशाही ज़ुल्मों को बड़े हर्ष से सहन किया।

जेल-यात्रा

अदालत में न्याय का नाटक खेला गया। सरदार वल्लभ-भाई को तीन महीने की सज़ा देकर जेल भेज दिया गया। उनके साथ ही डाक्टर हार्डीकर और मि० शेरवानी को भी सज़ाएं दे दी गईं। महामना मालवीयजी को १०० रुपये जुर्माने अथवा जुर्माना न देने पर १५ दिन की क़ैद की सज़ा दी गई। मालवीयजी जुर्माना न देकर सरदार के साथ जेल चले गये। किन्तु एक दिन बाद ही किसी ग़ैर आदमी ने बिना

मालवीयजी की आज्ञा के उनका जुर्माना अदालत में जमा कर दिया। इस कारण इच्छा न रहते हुए भी महात्मा पण्डित मदनमोहन मालवीय तब जेल से छोड़ दिये गये।

इस प्रकार सरदार वल्लभभाई आज़ादी की लड़ाई में दुबारा जेल भेज दिये गये हैं। वे आजकल यरवदा जेल में बन्द हैं। सरकार ने डाक्टर सप्रू और मि० जयकर के द्वारा भारतीय नेताओं के सामने सन्धि का पाशा फेंका था। राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल और पं० मोतीलाल नेहरू सन्धि-चर्चा में भाग लेने के लिए नैनी जेल से यरवदा जेल में पहुंचाये गये। वहां महात्मा गांधी, पं० मोतीलाल, पं० जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती सरोजिनी नायडू और सरदार वल्लभभाई पटेल ने, सन्धि के लिए सरकार द्वारा फेंके गये पाशे पर विचार किया। परन्तु अन्त में दोनों दलों में कोई समझौता न हो सका। सरकार अपनी बात पर अड़ी रही और कांग्रेस के नेता अपनी बात पर। इधर देश में सरकार के दमन-दावानल का ज़ोर है। २५ हज़ार से ऊपर सत्याग्रही जेलों में भर चुके हैं। देखें ऊंट किस करवट बैठता है?

सरदार का गौरव

इस प्रकार सरदार वल्लभभाई देश के लिए सत्याग्रही क़ैदी के रूप में कष्ट सहन कर रहे हैं। अब तक उन्होंने जो त्याग

किया है, देश के सार्वजनिक जीवन को आगे बढ़ाने के लिए जो सदुद्योग किये हैं, उनसे उनका जीवन बहुत ऊंचा उठ गया है। आज तो वे देश के प्राण हैं, सङ्कट के समय आड़े आनेवाले महारथी हैं, और हैं बारडोली के मैदान में शत्रुओं के दाँत खट्टे कर देने वाले गांधी की सेना के ऐसे लड़ाकू योद्धा जो अपनी अद्भुत प्रतिभा और प्रचण्ड शक्ति के बल पर एक एक क्षण में युग पलट देने की क्षमता रखते हैं! इसीलिए सरदार ने आज देश के व्यावहारिक आदर्शवादी नेताओं की श्रेणी में बहुत ऊंचा और महत्व-पूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। सरदार केवल सभा-मञ्च पर धुवांधार लेक्चर फटकारने वाले आदमी नहीं हैं। वे इस विज्ञापन के युग में शान्ति से एकान्त में ठोस काम करनेवाले योद्धा हैं। वे केवल गर्जने वाले मेघ के समान नहीं, बल्कि चुपचाप बिना गर्जे समय पर मूसलाधार बरस पड़नेवाले बादल की तरह उपयोगी हैं। समय आवेगा जब संसार महापुरुष की श्रेणी में बिठाकर सरदार वल्लभभाई का स्वागत करेगा। उनकी दिन पर दिन चमकने वाली उज्ज्वल कृतियां उनका और इस देश का अधिकाधिक गौरव बढ़ाने में समर्थ होंगी।

किसानों के राजा

श्रीदत्तात्रय बालकृष्ण कालेलकर ने १३ मार्च सन् १९३०

के "हिन्दी नवजीवन" में सरदार वल्लभभाई के सम्बन्ध में लिखा था—

"सरदार वल्लभभाई राष्ट्र-पुरुष हैं। अगर हिन्दुस्तान किसानों का राष्ट्र है तो वल्लभभाई किसानों के राजा हैं। जब किसान व्याकुल होने लगता है, तब वल्लभभाई का भी .खून खौलने लगता है। उन्होंने राग-द्वेष का त्याग नहीं किया है, तो भी एक योगी की तरह राग-द्वेष को उन्होंने क़ाबू में कर लिया है। उनका योग साधु-सन्तों का नहीं, क्षत्रियों का योग है। उन्होंने ब्रह्मचर्य्य-व्रत का पालन, परलोक में काम आने वाले मोक्ष के लिए नहीं, बल्कि अपने ३० करोड़ भाई-बहिनों को .गुलामी के नरक में से निकाल कर उन्हें ऐहिक मोक्ष प्राप्त कराने के लिए किया है। वल्लभभाई के पास रात को सो रहने के लिए घर नहीं है। ऐशो-आराम के सूचक गाड़ी-घोड़े, साजो-सामान और वस्त्राभूषण भी नहीं हैं। उनके पास अपना कोई खानगी समय तक नहीं है। उन्होंने अपना सर्वस्व देश को दे डाला है। और .खूबी तो यह है कि इस सारे त्याग का उन्हें ज़रा भी ख़याल नहीं है। वह लोगों के दिल पर इस तरह की कोई छाप तक नहीं पड़ने देते कि वह स्वयं और लोगों से किसी तरह भिन्न हैं, या उच्च हैं। इसीमें उनकी सच्ची उच्चता है। यही वजह है कि आज सारे हिन्दुस्तान

की निगाह उन्हींकी ओर ख़ास तौर पर दौड़ी जाती है।

वल्लभभाई उन शिष्यों में से नहीं हैं जो गुरु के बताये हुए मन्त्र को रात-दिन घोटा ही करते हैं। एक बार सुन लिया, समझ लिया, ग्रहण कर लिया कि बस हो गया। फिर दुबारा पूछने की ज़रूरत ही क्यों रहे? और बार बार पूछा भी क्या जाय? श्रीरामचन्द्र ने एक पत्नी-व्रत लिया था, एक ही बाण चलाने का संकल्प किया था। एक वचन और एक टेक वाले बहुत से आर्य्य हैं और हो चुके हैं। मगर वल्लभभाई ने तो मानों एक विचार का व्रत ग्रहण किया है। उन्हें राजनैतिक आन्दोलन से नफरत थी। सार्वजनिक जीवन पर उन्हें अश्रद्धा थी। पामर युग के प्रति अपने तिरस्कार को वे ताश और सिगार में डुबो देते थे। इसी समय उन्होंने गांधीजी को देखा, परखा, और स्वीकार किया। बस, उस दिन से आज तक वे एक निष्ठा के साथ गांधीजी के मार्ग पर चलते रहे हैं।

कौन कहता है कि वल्लभभाई साहित्य-विशारद नहीं हैं? उनके बारडोली वाले भाषणों में जो जीती-जागती सरस्वती बहती है, वीर, करुण, हास्य, आदि सभी रसों का परिचय मिलता है, वैसी भाषा कोई लेखक-सम्राट, या व्याख्यान पञ्चानन लिखकर दिखावे तो सही? कौन कहता है

कि वल्लभभाई राजनीतिज्ञ नहीं हैं? गुजरात के छोटे मोटे सरकारी अफ़सरों और कर्मचारियों को उनकी इस शक्ति का अविस्मरणीय परिचय है। सारांश यह है कि, वल्लभभाई तेजस्वी हैं, शूर हैं। नामर्दों की राजनीति से वे परिचित नहीं हैं, अतः जब कुछ भी करने को न हो, तब 'बेकार बैठे बैठे बादशाहा का काम' उन्हें सूझ नहीं पड़ता। पिंजड़े में बन्द सिंह के समान चक्कर काट कर वह अपना समय बिता देते हैं। वल्लभभाई के स्वभाव में नर्मी का नाम नहीं है। लोकमान्य में भी यह नहीं था! लेकिन सच्चे देशभक्तों के प्रति उनके प्रेम और अभिमान को कौन नहीं जानता? उनकी इज़्ज़त को सरदार अपना इज़्ज़त समझ कर बरतते हैं। वे बातों से किसी की क़द्र नहीं करते, बल्कि अवसर पड़ने पर मनुष्य से उसकी शक्ति के अनुसार काम करा के वह उसकी क़द्र करते हैं। इसका कारण यह है कि वह अपने साथियों को अपने ही समान योद्धा और सैनिक मानते हैं, सम्मान के भूखे राज-दरबारी अमीर या उमराव नहीं।

वल्लभभाई को गुजरात की सरदारी सौंप कर गांधीजी अपने प्रान्त के लिए निश्चिन्त हो गये थे। इन पन्द्रह वर्षों में गांधीजी ने 'नवजीवन' तथा आश्रम के द्वारा गुजरात की बहुत कुछ सेवा की है, लेकिन कुल मिला कर यह कहा जा सकता है कि

गांधीजी ने गुजरात की बहुत फिक्र नहीं की। भारतवर्ष के दूसरे प्रान्तों को तैयार करने में ही उनकी शक्ति का अधिक उपयोग हुआ है। इसका एक मात्र कारण यह है कि गांधीजी को वल्लभभाई की वीरता और अनन्य निष्ठा में पूर्ण विश्वास है।

जिन दिनों अहमदाबाद में तूफान उठ रहा था, उन्हीं दिनों मैंने पहले-पहल वल्लभभाई के दर्शन किये थे। तब से अब तक मैंने उन्हें अखण्ड सेवा में ही अपना जीवन बिताते हुए देखा है। उस समय उन्होंने लोगों के दिल पर जो प्रभाव डाला था, वह अब तक अखण्ड बना रहा है। आज गुजरात की शान्ति किसी भी सभ्य राष्ट्र का गौरव बढ़ा सकती है।

गांधीजी के सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप देने में वल्लभभाई ने जिस कुशलता का परिचय दिया है, उसे देख कर बहुतों के दिल में यही विचार उठते हैं कि अगर गांधीजी अपना सारा काम वल्लभभाई के द्वारा करावें तो सर्व साधारण उसे जल्दी समझ सकेंगे। चाहे जो हो, परन्तु जिसने खेड़ा ज़िले के धारालों और बहार बटियों (गुजरात की जरायम पेशा जातियाँ) के हृदयों से लेकर इस समय के सर्वश्रेष्ठ पुरुष के ध्येयवाद तक को समझने की शक्ति का परिचय दिया है, उसे अगर हम राष्ट्र-पुरुष न कहें तो और कौन राष्ट्र-पुरुष हो सकता है? लोकमान्य के बाद, जनता के हृदय को

परखने वाला वल्लभभाई के समान और कोई पुरुष पैदा नहीं हुआ। मेरा यह पक्का विश्वास है कि अगर हमारा यह धर्म-युद्ध बहुत दिनों तक चला तो वल्लभभाई महाराष्ट्र में जान फूँकने वाले छत्रपति शिवाजी की भाँति कुछ कलाओं का दुनियां को परिचय करावेंगे। आज भी वह महाराष्ट्र, कर्नाटक, तामिल नाड, और विहार के किसानों का दिल चुरा चुके हैं। गुजरात की सेवा द्वारा उन्होंने देश के सब प्रान्तों में आशा की किरणें फैलाई हैं, और श्रद्धा के बीज बोये हैं।

सविनय-भङ्ग की जांच-समिति ने देश का जो उत्साह भङ्ग किया था उसे दूर कर के, देश को फिर से स्वराज्य-निष्ठ बनाने का काम बारडोली के विजयी सेनापति वल्लभभाई ही ने किया है।

सरकार का गांधीजी से भी पहले वल्लभभाई को पकड़ लेना, इस बात का एक अचूक प्रमाण है कि स्वयं सरकार भी उन्हें राष्ट्र-पुरुष के रूप में पहचान गई है।

राष्ट्र-पुरुष राष्ट्र के स्वयंभू राजा होते हैं। उनकी वाणी ही राष्ट्र-शासन का काम करती है। ऐसे राष्ट्र-पुरुष का अपमान करने वाली राजद्रोही सरकार को समुचित सज़ा मिलनी चाहिए। अब तो यह सज़ा उसे मिलकर ही रहेगी। पर मालूम होता है, सरकार यह सज़ा अपने हाथों ही कर लेगी।"

सचमुच ईश्वर ने सरदार वल्लभभाई के जीवन में अद्भुत गुणों का समावेश किया है। सरदार ने देश के सार्वजनिक जीवन में अपने त्यागमय जीवन का आदर्श रखकर गांधीवाद की उस जटिलतम पहेली की स्पष्ट व्याख्या कर दी है जिसके सुलझाने में बड़े से बड़े दिमाग़ चक्कर खा रहे हैं। महात्मा गांधी के सत्याग्रह-धर्म के सिद्धान्त को अमल में लाकर, उन्होंने उस पर अपनी उंगली के इशारे से हज़ारों अपढ़-कुपढ़ किसानों से व्यवहार कराया है। सत्याग्रह का ऊंचा आदर्श अब सर्वसाधारण के लिए उतना जटिल नहीं रह गया, जितना अबसे कुछ वर्ष पहले था। सरदार ने अब उसका राज-मार्ग प्रत्येक भारतीय के लिए खोल दिया है। वह दिन दूर नहीं, जब इस देश के करोड़ों आदमी, ऊंच-नीच का भेद-भाव छोड़, कन्धे से कन्धा मिला कर, उस राज-मार्ग पर आगे बढ़कर इस देश के आत्मोद्धार की समस्या हल करेंगे। परमेश्वर करे, वह दिन जल्द आवे जब सरदार वल्लभभाई ऐसे निस्पृह और रण-कुशल योद्धा अपने करोड़ों देश-वासियों के साथ भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति के पुनीत कार्य्य में सफलता प्राप्त करें, और संसार को दिखा दें कि गांधीवाद में आज भी वह अजेय शक्ति है जिसके मुक़ाबले पाप-पङ्क में सना हुआ भौतिकवाद कभी ठहर नहीं सकता।

From page 1 to 48 printed by Pandit Ramkishore Malviya at the Abhyudaya Press, Allahabad, from page 49 to 112 and introduction printed by Pandit Surendra Sharma at the Shukla Press, Allahabad and only cover printed by Pt. Bishambhar Nath Bhargava, at the Standard Press, Allahabad.



at
c-
a-
ue